RNI No. UPHIN/2015/65982

₹10

समाज जागरण का शंखनाद

अवध प्रहरी

वर्ष : 12 अंक : 01 01–15 जनवरी 2026

चिकित्सा क्षेत्र में जिहादी जड़ें

सम्पादकीय

सोशल मीडिया से दूर रहें बच्चे

परिवार, समाज और राष्ट्र– तीनों की स्वस्थ संरचना का आधार बाल मन होता है। जिस प्रकार बीज की रक्षा से वृक्ष सशक्त बनता है, उसी प्रकार बाल्यावस्था में संस्कार, संयम और दिशा मिलना आवश्यक है। हाल ही में मद्रास उच्च न्यायालय द्वारा केन्द्र सरकार को 16 वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिये सोशल मीडिया पर प्रतिबन्ध पर विचार करने का सुझाव इसी व्यापक सामाजिक चिन्ता की अभिव्यक्ति है। यह विषय केवल तकनीक या अधिकार का नहीं, बल्कि संस्कार, सुरक्षा और सामाजिक सन्तुलन का प्रश्न है।

आज सोशल मीडिया केवल संवाद का माध्यम नहीं रहा, वह विचार, व्यवहार और भावनाओं को दिशा देने वाली शक्ति बन चुका है। दुर्भाग्यवश, इसका सबसे अधिक प्रभाव उन बच्चों पर पड़ रहा है जिनका मन अभी निर्माण की अवस्था में है। मोबाइल स्क्रीन पर अनियंत्रित समय बिताने से बच्चों में एकाग्रता की कमी, चिड़चिड़ापन, आक्रामकता, असंवेदनशीलता और आत्मकेन्द्रित सोच बढ़ती जा रही है। भारतीय पारिवारिक व्यवस्था, जो संवाद, स्नेह और सामूहिकता पर आधारित रही है, वह धीरे–धीरे स्क्रीन के सामने मौन होती जा रही है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का दृष्टिकोण सदा से यह रहा है कि व्यक्ति का निर्माण, परिवार से और राष्ट्र का निर्माण व्यक्ति से होता है। यदि बाल्यावस्था में ही बच्चों को आभासी संसार की अराजकता के हवाले कर दिया गया, तो भविष्य का नागरिक दिशाहीन होगा। सोशल मीडिया पर उपलब्ध कई प्रकार की सामग्री–अश्लीलता, हिंसा, भ्रामक विचार, उपभोक्तावाद और पश्चिमी जीवनशैली का अन्धानुकरण– भारतीय जीवन मूल्यों से मेल नहीं खाती। यह बच्चों की संस्कृति–बोध क्षमता को क्षीण करती है।

यह प्रश्न केवल प्रतिबन्ध का नहीं, बल्कि नियमन और उत्तरदायित्व का है। 16 वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिये सोशल मीडिया पर सख्त नियंत्रण, उम्र सत्यापन और अभिभावकीय अनुमति अनिवार्य की जानी चाहिये। तकनीकी कम्पनियाँ केवल लाभ के लिये बच्चों को उपभोक्ता न बनायें, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व निभाएँ– यह अपेक्षा स्वाभाविक है। सरकार की भूमिका केवल कानून बनाने तक सीमित न रहकर, जन–जागरूकता, डिजिटल साक्षरता और पारिवारिक संवाद को प्रोत्साहित करने की भी होनी चाहिये।

संघ परिवार सदैव यह मानता आया है कि समाधान बाहरी नियंत्रण से अधिक आत्मसंयम और सामाजिक चेतना में निहित है। माता–पिता, शिक्षक और समाज को मिलकर बच्चों के लिये ऐसा वातावरण बनाना होगा, जहाँ खेल, पुस्तक, प्रकृति, संस्कार शिक्षा और पारिवारिक संवाद को प्राथमिकता मिले। बालक यदि शाखा, खेल मैदान, पुस्तकालय और परिवार से जुड़े रहेंगे, तो स्क्रीन स्वयं सीमित हो जायेगी।

यह भी आवश्यक है कि हम आधुनिक तकनीक का विरोध नहीं, बल्कि उसका सन्तुलित उपयोग सिखाएँ। तकनीक साधन है, साध्य नहीं। बच्चों को यह समझाना होगा कि मोबाइल जीवन का केन्द्र नहीं, बल्कि सहायक उपकरण है। भारतीय संस्कृति में संयम, मर्यादा और विवेक को सर्वोच्च स्थान दिया गया है, आज उसी विवेक की पुनर्स्थापना आवश्यक है।

अतः 16 वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिये सोशल मीडिया पर प्रतिबन्ध या सख्त नियंत्रण पर विचार करना समय की माँग है। यह निर्णय किसी स्वतंत्रता को छीनने का नहीं, बल्कि भविष्य की पीढ़ी को सुरक्षित, संस्कारित और राष्ट्रनिष्ठ बनाने का प्रयास होना चाहिये। यदि आज हम बाल मन की रक्षा कर सके, तो कल का भारत स्वाभाविक रूप से सशक्त, समरस और आत्मविश्वासी बनेगा।।●

समाज जागरण का शंखनाद

अवध प्रहरी

पाक्षिक

वर्ष : 12 अंक : 01

RNI. No. UPHIN/2015/65982

सम्पादक

शिवबली विश्वकर्मा

सम्पादक मण्डल

डॉ. अनूप आनन्द

सुरेश सिंह

विवेक रॉय

मृत्युंजय दीक्षित

कार्यालय

संस्कृति भवन

राजेन्द्र नगर, लखनऊ-226004

ई-मेल

avadhprahari@gmail.com

मुद्रक एवं प्रकाशक शम्भू दयाल पुरवार द्वारा भारतीय संस्कृति पुनरुत्थान समिति के लिए नूतन आफसेट, संस्कृति भवन, राजेन्द्रनगर लखनऊ से मुद्रित एवं संस्कृति भवन, राजेन्द्रनगर लखनऊ से प्रकाशित।

Scan & Subscribe

अनुक्रम

चिकित्सा क्षेत्र में जिहादी जड़ें 04

लोहड़ी प्रसाद का पर्व मकर संक्रान्ति 07

संघ गंगा ने मंच पर उतारी आरएसएस की... 08

त्याग की परम्परा है षटतिला एकादशी 09

स्वामी विवेकानन्द : चेतना, चरित्र और... 10

"गुस्ताख-ए-नबी की एक सजा, सर... 11

युवा शक्ति से ही सशक्त भारत का निर्माण... 12

मिट्टी के मोतियों से आत्मनिर्भरता की रोशनी 13

चारों वेदों के मूल मंत्र होंगे संरक्षित 15

सुभाषित

अग्निशेषं ऋणशेषं शत्रुशेषं तथैव च ।
पुनः पुनः प्रवर्धेत तस्मात् शेषं न कारयेत्॥

यदि कोई आग, ऋण, या शत्रु अल्प मात्रा अथवा न्यूनतम सीमा तक भी अस्तित्व में बचा रहेगा तो बार-बार बढ़ेगा, अतः इन्हें थोड़ा सा भी बचा नहीं रहने देना चाहिये। इन तीनों को सम्पूर्ण रूप से समाप्त ही कर डालना चाहिये।

सम्पर्क- 0522-4106333, 90 90 30 40 96

अवध प्रहरी प्रकाशन सेवा न्यास

खाता संख्या : 02510210002360
आई एफएससी : UCBA0000251
यूको बैंक, शाखा नाका, लखनऊ

पत्रिका प्राप्ति के लिए सहयोग राशि

वार्षिक सदस्यता	₹ 200
12 वर्षीय सदस्यता	₹ 1000
आजीवन सदस्यता	₹ 2000

लेखक के विचारों से सम्पादक व प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा।

चिकित्सा क्षेत्र में जिहादी जड़ें

देशभर के चिकित्सा संस्थानों में जिहादियों की घुसपैठ बढ़ रही है। इंटीग्रल यूनिवर्सिटी, कानपुर कार्डियोलॉजी, इरा मेडिकल कॉलेज, हरियाणा की अल-फलाह यूनिवर्सिटी और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में लव-जिहाद और आतंकवादी मानसिकता के लोग तैयार हो रहे हैं। ताजा मामला उत्तर प्रदेश के सबसे प्रतिष्ठित चिकित्सा संस्थान किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी का सामने आया है, जहाँ प्रेम-विवाह से पहले हिन्दू रेजिडेण्ट छात्रा से धर्म बदलने का दबाव डाला गया। यह दबाव उसी के साथ पढ़ने वाले पुरुष रेजिडेण्ट डॉक्टर रमीजुद्दीन नायक उर्फ रमीज मलिक ने डाला। महिला रेजिडेण्ट ने धर्मान्तरण का विरोध किया तो प्रेमी ने उसे छोड़ दिया। मानसिक रूप से परेशान महिला रेजिडेण्ट ने आत्महत्या का प्रयास किया।

गम्भीर अवस्था में रेजिडेण्ट को केजीएमयू के ट्रॉमा सेन्टर में भर्ती किया गया। छात्रा हफ्तेभर आईसीयू में रही। इस दौरान पैथोलॉजी विभाग के विभाग अध्यक्ष से परिजनों ने छात्र के साथ दुष्कर्म और धर्म-परिवर्तन के प्रयास की कई बार शिकायत की लेकिन विभाग अध्यक्ष ने कोई कार्रवाई नहीं की, बल्कि छात्रा पर ही समझौते का दबाव डालने लगे। उन्होंने तो यहाँ तक कह दिया कि अगर बात नहीं मानी तो हम करियर बर्बाद कर देंगे। इसके बाद पीड़िता के परिवारीजनों ने मुख्यमंत्री जन सुनवाई पोर्टल व राज्य महिला आयोग में की है।

महिला रेजिडेण्ट केजीएमयू हॉस्टल में रहती थी। जुलाई 2025 में साथ में पढ़ायी करने वाले पुरुष रेजिडेण्ट डॉक्टर रमीज से भेंट हुई। बातचीत का सिलसिला शुरू हुआ। पीड़िता के परिवारीजनों का आरोप है कि पुरुष रेजिडेण्ट ने बेटी को प्रेमजाल में फंसाया, शोषण किया। जब बात शादी की आयी तो धर्मान्तरण का दबाव डाला। इस पर महिला राजी नहीं हुई। इसके बाद रमीज महिला रेजीडेण्ट को धमकी देने लगा।

पीड़िता द्वारा दर्ज FIR के अनुसार रमीज पहली बार 8 या 10 अगस्त को उसके ठाकुरगंज स्थित किराये के मकान पर पहुँचा और शारीरिक सम्बन्ध बनाये। इसके बाद उसकी इच्छा के विरुद्ध लगातार शारीरिक सम्बन्ध बनाता रहा। सितम्बर माह में उसे अपने गर्भवती होने की जानकारी हुई, जिसके बाद आरोपित ने जबरन गर्भपात कराने के लिये दवा खिला दी। इसी महीने पीड़िता की मुलाकात एक अन्य युवती से हुई, जिसने स्वयं को आरोपित की पत्नी बताया। युवती ने दावा किया कि आरोपित ने उससे पहले धर्म-परिवर्तन कराया और फरवरी माह में निकाह किया था। इस खुलासे के बाद पीड़िता को ठगे जाने का अहसास हुआ। आरोप है कि आरोपी ने विश्वास, भावनाओं और भविष्य का झाँसा देकर पीड़िता का रेप किया।

प्राइवेट फोटो और वीडियो वायरल करने की धमकी

पीड़िता के अनुसार रमीज की पत्नी ने उसे बताया कि फरवरी 2025 में उसका धर्म-परिवर्तन कराकर रमीज से निकाह कराया गया था। इसके बावजूद आरोपी डॉक्टर ने पीड़िता को शादी का झाँसा देकर उससे शारीरिक सम्बन्ध बनाये। जब पीड़िता ने विवाह के लिये दबाव बनाया तो आरोपी ने धर्म-परिवर्तन की शर्त रख दी। इसके बाद आरोपी लगातार पीड़िता पर धर्म बदलने का दबाव बनाने लगा।

इसी बात को लेकर दोनों के बीच विवाद शुरू हो गया। जब पीड़ित महिला डॉक्टर ने आरोपी से दूरी बना ली, तो उसने उसकी आपत्तिजनक फोटो और वीडियो वायरल करने की धमकी देकर मानसिक रूप से प्रताड़ित करना शुरू कर दिया।

2025 में की थी पहली शादी

डॉ. रमीज ने 2025 में अपनी आगरा मेडिकल कॉलेज की सहपाठी एक हिन्दू लड़की की धर्म परिवर्तन करवा के शादी की थी, लेकिन चौंकाने वाली बात है कि उसने शादी में अपने किसी भी

वीसी ऑफिस के सामने मदरसा छात्रों का स्वागत

केजीएमयू में 26 जनवरी, 2025 को वीसी कार्यालय के सामने पोडियम बनाकर मदरसा के छात्रों को इकट्ठा किया गया। ये केजीएमयू की कार्यप्रणाली और शैक्षणिक वातावरण को लेकर गम्भीर सवाल खड़े किये हैं। राष्ट्रीय त्योहारों के अवसर पर केजीएमयू में मदरसा के छात्रों को आमंत्रित कर कुलपति कार्यालय के सामने मंच और पोडियम उपलब्ध कराया गया, जो विश्वविद्यालय की मूल भावना पर सवाल खड़े करता है। यदि इसे सर्वधर्म या सर्व मजहब सम्भाव के उद्देश्य से किया गया था, तो यह एक सकारात्मक पहल मानी जा सकती है। समानता के सिद्धान्त के तहत गुरुकुल के छात्रों को भी इसी तरह कुलपति कार्यालय में आमंत्रित किया जाना चाहिये था और उन्हें भी मंच, माइक और सम्मान दिया जाना चाहिये था, लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

दोस्त या स्कूल कॉलेज के लोगों को इसकी जानकारी भी नहीं होने दी। उसकी पत्नी ने बताया कि धर्म-परिवर्तन करने के कारण परिवार वाले भी उसे छोड़ दिये और रमीज भी उसे प्रताड़ित करता है, जिसकी वजह से वह कई बार सुसाइड की कोशिश की।

शिकायत के बाद हफ्तों दौड़ाता रहा विभाग

जब महिला और उसके माता-पिता ने विभाग में रमीज की शिकायत की तो परिजनों को हफ्ते भर दौड़ाते रहे और लड़की पर समझौता करने का दबाव बनाने लगे। उन्होंने धमकी दी कि ऐसा न करने पर उनकी लाइफ बर्बाद कर दी जायेगी, निष्कासित भी किया जा सकता है। इसके बाद लड़की के साथ उनके परिजन भी भयभीत हो गये, लेकिन कुछ हिन्दू संगठन साथ आये और मुख्यमंत्री कार्यालय और उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग में डॉक्टर के खिलाफ शिकायत दर्ज करायी।

मामला दबाता रहा केजीएमयू प्रशासन

शुरुआत में केजीएमयू ने यह कहते हुए टाल दिया कि महिला रेजिडेण्ट ने विश्वविद्यालय प्रशासन को लिखित में शिकायत नहीं की है। महिला रेजिडेण्ट ने बताया कि मैंने कई बार विभागाध्यक्ष सुरेश बाबू से शिकायत की, लेकिन इसके बाद भी कोई कार्रवाई नहीं हुई। हिन्दू संगठन के आने और जोरदार प्रदर्शन करने के बाद मजबूरी में केजीएमयू को जाँच के लिये कमेटी गठित करनी पड़ी।

केजीएमयू के इस्लामी करण में मात्र रमीज नहीं पूरी गैंग

उत्तर प्रदेश महिला आयोग की अध्यक्ष बबीता चौहान ने कहा कि महिला डॉक्टर के यौन शोषण और धर्मान्तरण के प्रयास के आरोपी रेजिडेण्ट डॉक्टर रमीज मलिक के खिलाफ जरूर कार्रवाई होगी। यह एक व्यक्ति का काम नहीं है। इसमें गैंग है। प्रकरण को लेकर सीएम योगी से भी मिलूँगी।

कमेटी पर भी उठे सवाल

धर्म-परिवर्तन का दबाव और यौन शोषण जैसे गम्भीर आरोपों की जाँच का अनुभव डॉक्टरों को नहीं होता। डॉक्टर बीमारी का इलाज करने में दक्ष होते हैं, लेकिन आपराधिक, सामाजिक और कानूनी पहलुओं से जुड़े मामलों की जाँच के लिये विशेष प्रशिक्षण और अधिकार की जरूरत होती है। ऐसे में आंतरिक कमेटी से जाँच कराने पर जाँच भटकने या प्रभावित होने की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता, लेकिन फैक्ट फाइंडिंग कमेटी में प्रो. के.के. सिंह (अध्यक्ष), मेडिकल सुपरिटेंडेण्ट डॉ. सुरेश कुमार, प्रॉक्टर डॉ. आर.ए.एस. कुशवाहा, प्रो. हैदर अब्बास और डॉ. सुमित रुंगटा (सदस्य-सचिव) को शामिल किया गया। इसके बाद हिन्दू संगठन संगठनों के विरोध-प्रदर्शन के बाद दो और सदस्यों प्रसूति एवं स्त्री रोग विभाग की अध्यक्ष प्रो. अँजू अग्रवाल के साथ ही सेवानिवृत्त आईपीएस अधिकारी भावेश कुमार को भी शामिल कर लिया, लेकिन इसके बावजूद यह एक अधीनस्थ संस्था है, जिस पर दबाव बनाकर जाँच में परिवर्तन किया जा सकता है। हिन्दू संगठन स्वतंत्र जाँच कमेटी जिसमें महिला आयोग की सदस्य, रिटायर्ड आईएएस, आईपीएस और सेवानिवृत्ति जज शामिल हो की माँग कर रहा है, जिससे निष्पक्ष जाँच हो सके लेकिन केजीएमयू उसके लिये तैयार नहीं है।

हिन्दू महिलाओं के साथ षड्यंत्र

उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग की उपाध्यक्ष अपर्णा यादव ने कहा कि लव-जिहाद हिन्दू महिलाओं के साथ किया जाने वाला एक गम्भीर षड्यंत्र है। उन्होंने आरोप लगाया कि केजीएमयू के रेजिडेण्ट डॉक्टर रमीज मलिक ने पीड़िता पर धर्म-परिवर्तन का दबाव बनाकर

विभाग में पढ़ी जाती है नमाज

पैथोलॉजी विभाग के अध्यक्ष सुरेश बाबू व लैब इंचार्ज वाहिद अली पर लैब के अन्दर नमाज पढ़ने और छात्रों को पढ़ने के लिये मजबूर करने के भी आरोप लगाते आये हैं। कई छात्रों का यहाँ तक कहना है कि अगर वह कलवा बाँधकर या टीका लगा कर जाते हैं, तो सुरेश बाबू इस पर आपत्ति जताते हैं। इसके बावजूद अगर वह छात्र ऐसा करता है, तो ये दोनों लोग अलग-अलग तरीकों से उसे परेशान करना शुरू कर देते हैं। इसकी शिकायत कई बार हुई लेकिन उनके खिलाफ कोई एक्शन नहीं हुआ। यहाँ तक की लड़की ने भी इन दोनों पर आरोपी डॉक्टर रमीज का सहयोग करने का आरोप लगाया इसके बावजूद विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा इन दोनों लोगों को सस्पेण्ड नहीं किया गया। बल्कि इन लोगों को ड्यूटी पर रखा गया। जिससे यह साक्ष्यों को प्रभावित कर सकें।

केजीएमयू में सात से अधिक मजारें

केजीएमयू परिसर में धार्मिक ढाँचों को लेकर एक बार फिर सवाल उठ रहे हैं। विश्वविद्यालय परिसर में सात से अधिक मजारें मौजूद हैं, जिनमें से कुछ एक को छोड़कर प्रत्येक का क्षेत्रफल एक हजार स्क्वायर फीट से अधिक है। ये मजारें ओपीडी के सामने साहमीना मजार, ट्रॉमा सेंटर के बगल में, पीडियाट्रिक विभाग के सामने, गेट नम्बर-24 के सामने तथा रेस्पिरेटरी और आर्थोपेडिक विभागों के आसपास स्थित हैं। केजीएमयू के प्रवक्ता डॉ. के.के. सिंह के अनुसार, साहमीना मजार के आसपास बने छोटे-छोटे मजारों के नाम पर लगभग 30 हजार स्क्वायर फीट जमीन पर कब्जा है। इतना ही नहीं, साहमीना मजार के सामने करीब 14 दुकानें संचालित हो रही हैं, जिनसे मजार की देख-रेख करने वालों द्वारा किराया वसूला जाता है, जबकि यह भूमि केजीएमयू की है। इस पूरे मामले में विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से अब तक कोई ठोस आपत्ति या कार्रवाई सामने नहीं आयी है। इसके विपरीत, केजीएमयू परिसर में छोटे-छोटे करीब चार मन्दिर हैं। इनमें से वीसी आवास के पास और पुरानी डेंटल बिल्डिंग के बगल लगभग 400 स्क्वायर फीट क्षेत्र में स्थित है, जबकि शेष मन्दिर 100 स्क्वायर फीट से भी कम क्षेत्र में बने हैं। यह अन्तर प्रशासन के दोहरे मापदण्ड और चरित्र को उजागर करता है, जिस पर सवाल उठना स्वाभाविक है।

लव-जिहाद जैसी घटना को अंजाम दिया। पीड़िता ने इस सम्बन्ध में महिला आयोग से शिकायत की है। अपर्णा यादव ने कहा कि मामले में एफआईआर दर्ज कराकर डॉ. रमीज मलिक और उसके साथ शामिल सभी लोगों की गिरफ्तारी करायी जायेगी। उन्होंने बताया कि डॉ. मलिक की पहले भी एक हिन्दू महिला से शादी हो चुकी है, जिसका धर्म-परिवर्तन कराया गया था। मामले में केजीएमयू के प्रॉक्टर से भी शिकायत की गयी है।

नियम विरुद्ध पक्षपातपूर्ण नियुक्तियाँ

केजीएमयू वीसी का ओएसडी सैयद अख्तर अब्बास की नियुक्ति और सेवाकाल को लेकर गम्भीर आरोप सामने आये हैं। आरोप है कि इण्टर पास अब्बास की 28 दिसम्बर, 1989 से बिना विधिवत चयन के तदर्थ रूप से कनिष्ठ लिपिक पद पर नियुक्ति की गयी और बाद में बिना विनियमितीकरण के 1992 से अवैध स्थायीकरण कर दिया गया। इसके बाद उन्हें वरिष्ठता, पदोन्नति, पेंशन और अन्य सेवाजन्य लाभ नियमों के विपरीत दिये गये। पेंशन दिलाने के लिये सेवा पुस्तिका में कूटरचना के भी आरोप हैं।

बताया गया कि 2017 में कुलसचिव कार्यालय और 2021-22 में कुलपति कार्यालय में तैनाती के बाद उनकी भूमिका प्रभावशाली रही। अब्बास के चलते मुस्लिम समुदाय के लोगों को विशेष सुविधा दी जा रही है। उदाहरण के तौर पर अवकाश हेतु आवेदन करने के पश्चात् बिना अवकाश स्वीकृत हुए विदेश यात्रा पर जाने पर डॉ. अमोद सचान पर कार्रवाई हुई थी। वहीं, दूसरी तरफ मुस्लिम समुदाय की एनेस्थीसिया विभाग की डॉक्टर आर्मीन अहमद को बिना अनुमति बिना अवकाश स्वीकृत हुए ही विदेश यात्रा करने दिया गया। विदेश यात्रा से लौटने के बाद अवकाश स्वीकृत कर दिया गया। जबकि एक सरकारी कर्मचारी बिना लिखित अनुमति के विदेश यात्रा पर नहीं जा सकता।

इंटीग्रल यूनिवर्सिटी का कनेक्शन

आतंकी नेटवर्क को लेकर जाँच के दायरे में केवल केजीएमयू ही नहीं, बल्कि इससे पहले कई बड़े शैक्षणिक संस्थानों के नाम आ चुके हैं, जिसमें इंटीग्रल यूनिवर्सिटी का नाम भी सामने आ चुका है। जाँच एजेंसियों के अनुसार, दिल्ली बम धमाके के कथित मास्टरमाइण्ड डॉ. परवेज अहमद अंसारी का सम्बन्ध इंटीग्रल यूनिवर्सिटी से रहा है। बताया जाता है कि डॉ. परवेज अहमद, जैश कमाण्डर बताई जा रही डॉ. शाहीन सईद के भाई हैं। दिल्ली बम धमाके से तीन दिन पहले उन्होंने यूनिवर्सिटी से इस्तीफा दे दिया था।

सूत्रों के मुताबिक, डॉ. परवेज करीब चार साल तीन महीने तक इंटीग्रल यूनिवर्सिटी में असिस्टेन्ट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत रहे। एटीएस ने डॉ. परवेज और उनसे जुड़े लोगों से पूछताछ कर महत्वपूर्ण जानकारियाँ जुटायी हैं।

इरा मेडिकल कॉलेज से की पढ़ाई

डॉ. परवेज अहमद का एमबीबीएस में दाखिला लखनऊ के इरा मेडिकल कॉलेज में हुआ था। वर्ष 2010 में उन्होंने अयोध्या के एक अस्पताल में इंटर्नशिप की थी। इसी कारण परवेज अयोध्या क्षेत्र से पूरी तरह परिचित बताये जाते हैं।

कानपुर कार्डियोलॉजी इंस्टीट्यूट से जुड़े आतंकियों के तार

दिल्ली में लाल किला के नजदीक हुए विस्फोट के तार कानपुर के एलपीएस इंस्टीट्यूट ऑफ कार्डियोलॉजी एण्ड कार्डियक सर्जरी से जुड़े हैं। यहाँ के डॉ. आरिफ को हिरासत में लिया गया। एटीएस और एनआईए की संयुक्त टीम ने अशोकनगर स्थित उनके फ्लैट से लैपटॉप, मोबाइल और संदिग्ध दस्तावेज जब्त किये हैं। ❖

मरीजों की सेवा के नाम पर ट्रस्ट की कार्यशैली संदिग्ध

केजीएमयू के गेट नम्बर-2 के पास मरीजों की सहायता के नाम पर उम्मीद चैरिटेबल सोसायटी द्वारा एक केबिन स्थापित किया गया है। सूत्रों के हवाले से मिली जानकारी के अनुसार केबिन में केवल एक ही मजहब के लोगों को रखा गया है। यहाँ मरीजों की आवाजाही न के बराबर है, जबकि अन्दरूनी गतिविधियाँ किसी अन्य उद्देश्य से जुड़ी प्रतीत होती हैं। इन लोगों का केजीएमयू की चिकित्सीय सेवाओं से भी कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं है। यह ट्रस्ट कम्युनिटी मेडिसिन विभाग के डॉक्टर नईम अहमद द्वारा संचालित बताया जा रहा है, जिस पर निष्पक्षता और पारदर्शिता को लेकर सवाल उठ रहे हैं।

शैक्षणिक संस्थानों से आतंकी कनेक्शन

पुलिस सूत्रों और खुफिया एजेंसियों अनुसार दिल्ली बम धमाके से जुड़े आतंकियों के कनेक्शन मेडिकल कॉलेजों, कार्डियोलॉजी इंस्टीट्यूट सहित अन्य शैक्षणिक संस्थानों से मिले हैं। यही कारण है कि पिछले पाँच वर्षों में वहाँ से जुड़े डॉक्टरों, शोधार्थियों व छात्रों की सूची तैयार की है। इस क्रम में कुछ लोगों से पूछताछ भी की जा चुकी है। बताया जा रहा है कि पिछले वर्ष कुछ डॉक्टर और प्रोफेसर एक विशेष आयोजन में एकत्रित हुए थे, जिनकी फोटो और वीडियो सोशल मीडिया पर उपलब्ध हैं। ❖

लोहड़ी प्रसाद का पर्व मकर संक्रान्ति

हर साल 14 जनवरी को हम मकर संक्रान्ति मनाते हैं। यह एकमात्र भारतीय त्योहार है जो सौर कैलेण्डर के दिन मनाया जाता है। चूँकि बाकी सभी भारतीय त्योहार चन्द्र कैलेण्डर के अनुसार मनाये जाते हैं, इसलिये सौर कैलेण्डर के अनुसार उनके मनाने के दिन हर साल बदलते रहते हैं। खगोल विज्ञान, गणित और ज्यामिति सहित प्राचीन भारतीय विषयों में संस्कृत तकनीकी शब्द 'संक्रान्ति' का इस्तेमाल किया जाता था।

महत्वपूर्ण हिन्दू त्योहारों में से एक, मकर संक्रान्ति भारत के कई क्षेत्रों में बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस दिन आधिकारिक तौर पर नई फसल का मौसम शुरू होता है। हालांकि, मकर संक्रान्ति का सांस्कृतिक महत्व इस बात पर निर्भर करता है कि आप कहाँ रहते हैं; अलग-अलग राज्य इसे अलग-अलग नामों से मनाते हैं, लेकिन उसी स्नेह के साथ। मकर संक्रान्ति का हिन्दू त्योहार एक खगोलीय घटना पर आधारित है। इसी दिन सूर्य दक्षिण से उत्तरायण होता है। विज्ञान के अनुसार, यह सूर्य के खगोलीय भूमध्य रेखा को पार करने का संकेत देता है। सनातनी सूर्य की पूजा करते हैं और उसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं, उसे एक खगोलीय पिण्ड और एक सचेत देवता दोनों के रूप में देखते हैं।

मकर संक्रान्ति पर सुबह से शाम तक, चैतन्य चारों ओर व्याप्त रहता है। इसलिये, साधना (आध्यात्मिक अभ्यास) में लगे साधक को अधिक चैतन्य का सबसे बड़ा लाभ मिल सकता है। चैतन्य के परिणामस्वरूप साधकों में परम अग्नि सिद्धान्त, या तेजतत्व भी बढ़ता है। मकर संक्रान्ति साधना के लिये एक उत्कृष्ट दिन है।

सूर्य का उत्तर की ओर गमन सर्दियों के अन्त और उत्तरी गोलार्ध में अधिक दिन की रोशनी का संकेत देता है। अतीत में, यह कृषि चक्रों के साथ-साथ होता था, फसलें कट जाती थीं, फसलें भण्डारित की जाती थीं और नयी खेती की तैयारी शुरू हो जाती थी। अलाव जलाना, पतंग उड़ाना और नदी में नहाना व्यावहारिक मूल के सांस्कृतिक रीति-रिवाजों के उदाहरण हैं, जैसे लम्बे दिनों की शुरुआत और फसल कटाई के बाद खाली समय से जुड़े औपचारिक शुद्धिकरण। मकर संक्रान्ति उत्सव का एक अनिवार्य घटक छत पर इकट्ठा होना और सूरज के नीचे पतंग उड़ाना है। इस प्राचीन प्रथा का वैज्ञानिक महत्व है क्योंकि, लम्बी सर्दियों के बाद, सूर्य अन्ततः हमारी ऊर्जा को फिर से भरता है और हमारे शरीर को बैक्टीरिया और बीमारियों से शुद्ध करता है, हम खुशी-खुशी पतंग उड़ाते हैं।

सार्वभौमिक त्योहार

देश के अलग-अलग हिस्सों में इस दिन के उत्सवों को अलग-अलग नामों से जाना जाता है। मध्य भारत में सुकरात, असमिया हिन्दुओं में भोगली बिहू, तमिल और अन्य दक्षिण भारतीय हिन्दुओं में पोंगल और उत्तर भारतीय हिन्दुओं और सिखों में लोहड़ी। जिस तरह भारत के कई हिस्सों में मकर संक्रान्ति का त्योहार मनाया जाता है, उसी तरह एशिया के अन्य हिस्सों में भी इसे दूसरे नामों मनाया जाता है। उदाहरण के लिये, मकर संक्रान्ति उत्सव को थाईलैण्ड में सोंगक्रान और कम्बोडिया में मोहा संगक्रान्ता के नाम से

मकर संक्रान्ति एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जाति, धन और सामाजिक अन्याय के कारण समाज में आई कमियों को दूर करने की कोशिश कर रहा है। छह उत्सवों- विजयादशमी, मकर संक्रांति, हिन्दू साम्राज्य दिवस, गुरु पूर्णिमा तथा रक्षा बंधन में से, मकर संक्रान्ति एक ऐसा उत्सव है जो समाज में सद्भाव और आत्म-सम्मान को बढ़ावा देने के लिये छुआछूत और पुरानी गलत परम्पराओं को खत्म करने का प्रयास करता है। इस उत्सव का लक्ष्य आन्तरिक जागरूकता लाना और भारत को उसकी पूर्व गरिमा और शान वापस दिलाने के लिये कार्य करना है। इसके लिये हिन्दू सभ्यता बनाने वाली अलग-अलग जातियों को एक साथ आना होगा। डॉ. हेडगेवार जी के अनुसार, जब तक हिन्दू समाज बंटा हुआ है, भारत माता का अस्तित्व खतरे में रहेगा। ये उत्सव डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार जी ने सामाजिक समता, ममता, समरसता और हिन्दू एकता की विशेषताओं के अनुसार मनाना शुरु किया था, जिन्हें वे समाज के लिये जरूरी मानते थे। हर उत्सव किसी न किसी गुण का सम्मान करता है। मकर संक्रान्ति स्वामी विवेकानन्द के जन्मदिन का भी प्रतीक है। स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी, 1863 को मकर संक्रांति के शुभ दिन पर हुआ था। इसलीये इसी दिन को भारत में 'राष्ट्रीय युवा दिवस' के रूप में मनाया जाता है, जो उनके जन्मदिन को सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व से जोड़ता है।

जाना जाता है। इसके अलावा, दुनिया भर के लोग, खासकर भारतीय मूल के लोग, अपनी विरासत से जुड़ाव के कारण मकर संक्रान्ति मनाते हैं।

इस दिन तिल और गुड़ के मिश्रण से तैयार लड्डुओं को खाने का कारण यह है कि तिल के हर दाने में तेल से मिलने वाले तत्व होते हैं। सर्दियों में त्वचा रूखी और बेजान हो जाती है और उसे सुरक्षा और मुलायम बनाये रखने के लिये नमी की ज़रूरत होती है। इसलिये, तिल के लड्डू खाना, जो इस उत्सव का एक ज़रूरी हिस्सा है, यह त्वचा को नमी देता है। अक्सर तिल-गुड़ कहे जाने वाली ये मिठाइयाँ मकर संक्रान्ति उत्सव की परम्पराओं को दिखाती हैं और माना जाता है कि ये समुदाय में सद्भाव बढ़ाती हैं।

पर्यावरण की देखभाल

पर्यावरण को नुकसान पहुँचाये बिना प्रकृति का सम्मान करने के अलावा, मकर संक्रान्ति मनाना

उनके लिये भारतीय परम्परा के प्रति वफादार रहने और मकर संक्रान्ति के सार को बनाये रखने का एक तरीका है।

बायोडिग्रेडेबल पतंग उड़ाना कुछ अनोखी पर्यावरण-अनुकूल प्रथाओं में से एक है जो अब मकर संक्रान्ति उत्सव का एक अभिन्न अंग बन गयी हैं।

संघ के लिये, पारम्परिक मूल्यों और मकर संक्रान्ति के सार का त्याग किये बिना जीवन स्थितियों और सामुदायिक लाभों को आगे बढ़ाने के लिये विभिन्न सामाजिक अभियानों में भाग लेना उत्सव का एक और पहलू है। ❖

संघ गंगा ने मंच पर उतारी आरएसएस की शताब्दी यात्रा

लखनऊ। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की 100 वर्ष की वैचारिक, संगठनात्मक और सामाजिक यात्रा को नाटक संघ गंगा के माध्यम से प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया। भातखण्डे संस्कृति विवि के कलामण्डपम् में संस्कार भारती के तत्वावधान में आयोजित इस मंचन ने दर्शकों को संघ के पहले तीन सरसंघचालकों के जीवन, कार्य और नेतृत्व से परिचित कराया।

संघ स्थापना से राष्ट्र निर्माण तक

नाटक में संघ स्थापना के संकल्प, प्रचार-प्रसार की सोच और डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार के जीवन संघर्ष को सशक्त रूप में दिखाया गया। कठिन परिस्थितियों में कलकत्ता जाकर डॉक्टर बनने का सपना पूरा करने वाले केशव से डॉ. हेडगेवार बनने तक की यात्रा ने दर्शकों को भावुक किया। जातिवाद पर उनके स्पष्ट विचार और सामाजिक समरसता का सन्देश नाटक की मजबूत कड़ी रहा।

श्रीगुरुजी व नेतृत्व हस्तान्तरण

माधव सदाशिवराव गोलवलकर (श्रीगुरुजी) के जीवन प्रसंग, अखण्डानन्द के साथ उनका प्रवास, नागपुर लौटना, डॉ. हेडगेवार से भेंट और फिर अत्यन्त सादगी से सरसंघचालक पद का हस्तान्तरण- ये दृश्य दर्शकों को स्तब्ध कर देता हैं। गुरुजी का अन्तिम भाषण नाटक के

सबसे प्रभावशाली क्षणों में रहा।

नाटक में सरदार वल्लभभाई पटेल और गुरुजी के बीच संवाद, कश्मीर का भारत में विलय, संघ पर लगा प्रतिबन्ध जैसे ऐतिहासिक प्रसंगों को भारत माता की भूमिका के माध्यम से जोड़ा गया। भारत माता की कोमल लेकिन दृढ़ वाणी ने घटनाओं को सहजता से आगे बढ़ाया। मंच पर उनके अवतरण के साथ पूरा सभागार खड़ा होकर अभिवादन करता दिखा।

वन्दे मातरम का गगनभेदी उद्घोष, भगवा ध्वज का सन्तुलित उपयोग और संघ घोष की लय ने मंचन को जीवन्त बना दिया। नाटक का लेखन श्रीधर गाडगे ने किया। निर्देशन संजय पेण्डसे और मार्गदर्शन रविन्द्र भुसारी का रहा। संगीत डॉ. भाग्यश्री चिटणीस और नेपथ्य सतीश पेंडसे ने तैयार किया।

अभिनय ने छोड़ी गहरी छाप

मनीष ऊईके (डॉ. हेडगेवार), रमण सेनाड (गुरुजी) और यशवन्त चोपड़े (बालासाहेब देवरस) के अभिनय ने दर्शकों को ऐसा अनुभव कराया मानो वे इन विभूतियों से साक्षात मिल रहे हों। भारत माता की भूमिका मीनल मुण्डले ने निभायी, जबकि महात्मा गांधी की भूमिका में संकल्प ने बापू को जीवन्त किया।

त्याग की परम्परा है षटतिला एकादशी

● माघ मास में छिपा सामाजिक, स्वास्थ्य और सांस्कृतिक सन्देश

षटतिला एकादशी हिन्दू पञ्चाङ्ग के अनुसार माघ मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को मनायी जाती है। यह पर्व उत्तर भारत के ग्रामीण समाज में विकसित उस लोकबोध का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ ऋतु, आहार, स्वास्थ्य और सामाजिक आचरण को धार्मिक अनुशासन के माध्यम से व्यवस्थित किया गया। इस दिन भगवान विष्णु की पूजा, तिल का प्रयोग और दान को विशेष महत्व दिया गया है।

उत्तर प्रदेश में यह पर्व षटतिला एकादशी या तिल एकादशी कहलाता है, जबकि पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार और झारखण्ड के ग्रामीण अंचलों में इसे तिलकूट एकादशी अथवा तिल पर्व कहा जाता है। नामों की यह विविधता दर्शाती है कि यह पर्व शास्त्रों से अधिक लोकजीवन में रचा-बसा है।

इसी कालखण्ड में मनायी जाने वाली सकट या संकट चौथ भी इसी लोक-धार्मिक चेतना की निरन्तरता है। यद्यपि दोनों पर्व तिथि और देवता की दृष्टि से भिन्न हैं, परन्तु तिल का प्रयोग और संकट-निवारण की भावना इन्हें सांस्कृतिक रूप से जोड़ती है।

'षट' का अर्थ

सामान्यतः 'षट' शब्द को तिल के छह प्रयोगों से जोड़ा जाता है, किन्तु लोकबोध में इसका अर्थ केवल संख्या नहीं है। माघ मास ऋतु-संक्रमण का समय होता है, जब शीत अपने चरम पर होती है। ऐसे समय में शरीर के विभिन्न तंत्र-त्वचा, अस्थि, पाचन, रक्त, स्नायु और मन-विशेष देखभाल चाहते हैं। तिल के छह प्रकार के प्रयोग इन सभी स्तरों पर सन्तुलन बनाये रखने की लोक-प्रणाली माने जा सकते हैं।

तिल का लोकवैज्ञानिक महत्व

तिल भारतीय कृषि की प्राचीन और सुलभ फसल है। इसमें वसा, कैल्शियम और ऊर्जा प्रदान करने वाले तत्व प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं, जो शीत ऋतु में शरीर की ऊष्मा बनाये रखने में सहायक होते हैं। यही कारण है कि माघ मास में तिल को पर्व का केन्द्र बनाया गया। लोकपरम्परा में तिल केवल खाद्य नहीं, बल्कि औषधीय और रक्षात्मक तत्व भी माना गया है।

तिल के प्रयोग

षटतिला एकादशी पर तिल से स्नान, तिल का उबटन, तिल से हवन, तिल का दान, तिल का सेवन और तिल मिश्रित जल का पान-इन छह कर्मों का विधान है। तिल से स्नान और उबटन त्वचा तथा जोड़ों को शीत से बचाते हैं। तिल से हवन घर की नमी और अशुद्ध वायु को कम करने का साधन रहा है। तिल का सेवन शरीर को ऊर्जा देता है, जबकि तिल का दान समाज के कमजोर वर्ग को पोषण प्रदान करने का माध्यम बनता है। इस प्रकार धार्मिक कर्म के भीतर व्यावहारिक जीवन-संरक्षण निहित है।

तिलकूट परम्परा व प्रतीकात्मक बलि

ग्रामीण अंचलों में षटतिला एकादशी पर तिलकूट-अर्थात् तिल का ढेर-बनाने और प्रातःकाल उसे तोड़ने की परम्परा मिलती है। यह ढेर सामूहिक श्रम और संचय का प्रतीक होता है। प्रातः इसे तोड़ना केवल भौतिक क्रिया नहीं, बल्कि संचय, स्वामित्व और आसक्ति के भाव का प्रतीकात्मक विसर्जन है।

लोक-सांस्कृतिक दृष्टि से यह एक प्रकार की अहिंसक प्रतीकात्मक बलि है-जहाँ बलि किसी जीव की नहीं, बल्कि संग्रह की प्रवृत्ति की दी जाती है। तिलकूट टूटते ही तिल प्रसाद और दान के रूप में समाज में प्रवाहित हो जाता है। यह बलि देवता के लिये नहीं, बल्कि सामाजिक सन्तुलन के लिये है।

माँ-पुत्र केन्द्रित पूजा-परम्परा

षटतिला एकादशी से जुड़ी एक महत्वपूर्ण लोकपरम्परा माँ–पुत्र केन्द्रित पूजा-विधान है। अनेक ग्रामीण क्षेत्रों में माताएँ यह व्रत पुत्र की आयु, स्वास्थ्य और संकट-निवारण के लिये करती रही हैं। माघ मास को बालकों के लिये संवेदनशील समय माना जाता है; ऐसे में यह व्रत सन्तान-सुरक्षा की सामाजिक व्यवस्था का रूप ले लेता है।

कई स्थानों पर माँ तिलकूट से निकले तिल को पहले पुत्र के नाम से अर्पित करती है, फिर उसी तिल को प्रसाद और दान में बाँटती है। इसका प्रतीकात्मक अर्थ यह है कि पुत्र का कल्याण व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक समृद्धि से जुड़ा है। यहाँ मातृत्व केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि संरक्षक और सामूहिक भूमिका में प्रकट होता है।

षटतिला एकादशी उत्तर भारतीय ग्रामीण समाज की उस जीवन-दृष्टि को प्रकट करती है, जहाँ पर्व, स्वास्थ्य और सामाजिक सन्तुलन एक-दूसरे से अलग नहीं हैं। तिल के प्रयोग, तिलकूट की प्रतीकात्मक बलि और माँ–पुत्र केन्द्रित पूजा-परम्परा यह स्पष्ट करती हैं कि भारतीय लोक परम्पराएँ केवल आस्था नहीं, बल्कि अनुभव-सिद्ध जीवन-विज्ञान हैं। यह पर्व त्याग, साझेदारी और संरक्षण के माध्यम से समाज को सन्तुलित रखने का सन्देश देता है। ❖

स्वामी विवेकानन्द : चेतना, चरित्र और राष्ट्रनिर्माण

स्वामी विवेकानन्द उन्नीसवीं शताब्दी के भारत में किसी एक विचारधारा या परम्परा के प्रतिनिधि बनकर नहीं आते, बल्कि वे उस व्यापक भारतीय चेतना की अभिव्यक्ति हैं जो दासता, आत्महीनता और बौद्धिक जड़ता के दौर से गुजर रही थी। उनका जीवन और चिन्तन केवल आध्यात्मिक उन्नयन तक सीमित नहीं रहता, बल्कि समाज, शिक्षा और राष्ट्र के पुनर्निर्माण की गहरी चिन्ता से जुड़ा हुआ दिखायी देता है। वे ऐसे विचारक थे जिनके लिये आत्मा की मुक्ति और समाज की उन्नति परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक-दूसरे की पूरक प्रक्रियाएँ थीं। इसी कारण विवेकानन्द को समझना केवल एक व्यक्ति को समझना नहीं, बल्कि एक पूरे युग की बौद्धिक बेचैनी और सम्भावनाओं को समझना है।

स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी 1863 को कोलकाता में हुआ था। उनका बचपन ऐसे परिवार में बीता जहाँ आधुनिक शिक्षा और पारम्परिक संस्कारों का दुर्लभ सन्तुलन था। पिता विश्वनाथ दत्त न्यायप्रिय, तर्कशील और निर्भीक विचारों वाले व्यक्ति थे, जिनका प्रभाव नरेन्द्र के भीतर तार्किक सोच और स्वतंत्र विवेक के रूप में दिखायी देता है। वहीं माता भुवनेश्वरी देवी का व्यक्तित्व गहन धार्मिक आस्था, नैतिक अनुशासन और करुणा से परिपूर्ण था। इन दोनों प्रवृत्तियों का समन्वय ही आगे चलकर विवेकानन्द के चिन्तन की आधारभूमि बना।

बालक नरेन्द्रनाथ सामान्य अर्थों में सहज या अनुकूल बालक नहीं थे। उनमें बचपन से ही प्रश्न करने की प्रवृत्ति, नेतृत्व का भाव और आत्मविश्वास स्पष्ट दिखायी देता था। संगीत, व्यायाम और अध्ययन तीनों में उनकी गहरी रुचि थी। उनकी स्मरणशक्ति असाधारण थी, किन्तु उससे भी अधिक उल्लेखनीय था उनका असन्तोष, जो उन्हें सतही उत्तरों से कभी सन्तुष्ट नहीं होने देता था। ईश्वर, आत्मा और जीवन के उद्देश्य जैसे प्रश्न उन्हें लगातार मथते रहते थे। यही बौद्धिक बेचैनी आगे चलकर उनके जीवन की दिशा निर्धारित करती है।

महाविद्यालयीन जीवन में नरेन्द्रनाथ का सम्पर्क पाश्चात्य दर्शन, तर्कशास्त्र और आधुनिक विचारधाराओं से होता है। वे ह्यूम, कांट और स्पेंसर जैसे दार्शनिकों को पढ़ते हैं, परन्तु उनके भीतर यह भावना बनी रहती है कि यह ज्ञान जीवन की गहराइयों को पूरी तरह स्पर्श नहीं कर पा रहा है। इसी क्रम में उनका झुकाव ब्रह्म समाज की ओर होता है, जहाँ धार्मिक आडम्बर के बजाय नैतिकता और तर्क को महत्व दिया जाता था। किन्तु यहाँ भी उन्हें पूर्ण सन्तोष नहीं मिलता। उनका प्रश्न बना रहता है- क्या ईश्वर केवल विचार है, या अनुभव भी?

रामकृष्ण परमहंस से उनका मिलन इस प्रश्न को निर्णायक मोड़ देता है। नरेन्द्र का सीधा और साहसी प्रश्न- "क्या आपने ईश्वर को देखा है?" भारतीय आधुनिकता का प्रतिनिधि प्रश्न कहा जा सकता है। रामकृष्ण का उत्तर किसी दार्शनिक तर्क में नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष अनुभव में निहित था। यही अनुभव नरेन्द्र के भीतर चल रहे वैचारिक द्वंद्व को एक नयी दिशा देता है। यहाँ से वे न तो अन्धश्रद्धा की ओर जाते हैं और न ही नकारात्मक संशय में अटकते हैं। उनके भीतर एक ऐसी आध्यात्मिकता विकसित होती है जो विवेक, अनुभव और करुणा पर आधारित है।

रामकृष्ण के देहावसान के बाद विवेकानन्द का जीवन कठिन संघर्षों से गुजरता है। आर्थिक अभाव, अनिश्चित भविष्य और सामाजिक उपेक्षा उनके जीवन का हिस्सा बन जाते हैं। इसी काल में उनका व्यापक भारत-भ्रमण होता है, जो उनके चिन्तन को निर्णायक रूप से सामाजिक बनाता है। वे भारत के गाँवों, कस्बों और तीर्थों में देश की वास्तविक स्थिति से साक्षात्कार करते हैं। गरीबी, अशिक्षा, जातिगत भेदभाव और सामाजिक निष्क्रियता उन्हें भीतर तक उद्वेलित करती है। यहीं से उनके भीतर यह स्पष्ट होता है कि अध्यात्म यदि सामाजिक यथार्थ से कट जाये, तो वह खोखला हो

शिकागो में भाषण भारत की आत्मा का वैश्विक उद्घोष

1893 में शिकागो के विश्व धर्म संसद में दिया गया उनका भाषण केवल एक ऐतिहासिक घटना नहीं था, बल्कि भारत की आत्मा का वैश्विक उद्घोष था। वहाँ उन्होंने भारत को किसी पिछड़े या रहस्यमय देश के रूप में नहीं, बल्कि सहिष्णुता, उदारता और आध्यात्मिक परिपक्वता की भूमि के रूप में प्रस्तुत किया। इस भाषण के बाद विवेकानन्द विश्वपटल पर प्रसिद्ध हो गये, किन्तु उनकी दृष्टि सदैव भारत और उसकी समस्याओं पर केन्द्रित रही।

जाता है।

विवेकानन्द के लिये धर्म का अर्थ संन्यास या पलायन नहीं था। वे मानते थे कि भूखे व्यक्ति को उपदेश नहीं, सहारा चाहिये। 'दरिद्र नारायण' की उनकी अवधारणा इसी समझ से जन्म लेती है। वे आध्यात्मिकता को सेवा और कर्म से जोड़ते हैं। उनके विचारों में साधना और समाज एक-दूसरे से अलग नहीं, बल्कि एक ही प्रक्रिया के दो आयाम हैं। यह दृष्टि उन्हें परम्परागत सन्त-परम्परा से अलग करती है और आधुनिक सामाजिक चिन्तक के रूप में स्थापित करती है।

शिक्षा के विषय में विवेकानन्द का चिन्तन अत्यन्त मौलिक और दूरदर्शी था। वे शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन या रोजगार का साधन नहीं मानते थे। उनके अनुसार शिक्षा वह प्रक्रिया है जिससे मनुष्य के भीतर निहित पूर्णता प्रकट होती है। वे ऐसी शिक्षा के आलोचक थे जो व्यक्ति को आत्मविश्वासहीन और परावलम्बी बना दे। औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली पर उनका आरोप था कि वह चरित्रहीन और यांत्रिक व्यक्तित्व गढ़ रही है।

विवेकानन्द के लिये शिक्षा का मूल उद्देश्य चरित्र निर्माण था। उनका मानना था कि बिना चरित्र के विद्या समाज के लिये उपयोगी नहीं हो सकती। वे युवाओं को शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक तीनों स्तरों पर सशक्त देखना चाहते थे। स्त्री शिक्षा को उन्होंने राष्ट्र-निर्माण की अनिवार्य शर्त माना और स्पष्ट कहा कि जिस समाज में स्त्रियाँ शिक्षित नहीं होतीं, वह कभी आगे नहीं बढ़ सकता।

रामकृष्ण मिशन की स्थापना विवेकानन्द के विचारों को संस्थागत रूप देने का प्रयास थी। यह संस्था सेवा, शिक्षा और साधना के सन्तुलन का उदाहरण है। इसके माध्यम से विवेकानन्द ने यह सिद्ध किया कि विचार तभी जीवन्त रहते हैं जब वे समाज के धरातल पर उतरते हैं। आज जब शिक्षा अधिकतर प्रतिस्पर्धा और उपभोग का साधन बनती जा रही है, स्वामी विवेकानन्द का चिन्तन हमें आत्मनिर्माण, सेवा और सामाजिक उत्तरदायित्व की याद दिलाता है। उनका जीवन और विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने अपने समय में थे। वे केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि वर्तमान की आवश्यकता और भविष्य की दिशा हैं। ❖

"गुस्ताख-ए-नबी की एक सजा, सर तन से जुदा" जैसे नारे कानून व्यवस्था पर हमला : हाईकोर्ट

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने सख्त टिप्पणी करते हुए कहा है कि "गुस्ताख-ए-नबी की एक सजा, सर तन से जुदा" जैसे नारे लगाना न केवल कानून के शासन के खिलाफ है, बल्कि यह भारत की सम्प्रभुता और अखण्डता को भी सीधी चुनौती देता है। ऐसे नारे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता या शान्तिपूर्ण विरोध के दायरे में नहीं आते, बल्कि आम नागरिकों को हिंसा और सशस्त्र विद्रोह के लिये उकसाने के समान हैं। इसी टिप्पणी के साथ हाईकोर्ट ने बरेली हिंसा मामले में गिरफ्तार आरोपी रिहान की जमानत अर्जी खारिज कर दी।

यह आदेश न्यायमूर्ति अरुण कुमार सिंह देशवाल की एकल पीठ ने पारित किया। कोर्ट ने स्पष्ट किया कि भारतीय संविधान प्रत्येक नागरिक को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और शान्तिपूर्ण सभा का अधिकार देता है, लेकिन इन अधिकारों की स्पष्ट संवैधानिक सीमाएँ भी हैं। जब कोई भीड़ कानून को अपने हाथ में लेकर किसी व्यक्ति के लिए सिर कलम करने जैसी सजा की माँग करती है, तो यह कानून के शासन का खुला अपमान है।

पुलिस पर हमला, सम्पत्ति को नुकसान

भीड़ ने न केवल आपत्तिजनक नारेबाजी की, बल्कि पुलिस पर पथराव किया, पेट्रोल बम फेंके और फायरिंग भी की। हिंसा में कई पुलिसकर्मी घायल हुए, वहीं सरकारी और निजी सम्पत्तियों को भी भारी नुकसान पहुँचा। मौके से ही रिहान सहित कई लोगों को गिरफ्तार किया गया और सम्बन्धित धाराओं में प्राथमिकी दर्ज की गयी।

क्या है पूरा मामला

बरेली के कोतवाली थाना क्षेत्र में 26 मई, 2025 को निषेधाज्ञा लागू होने के बावजूद हिंसक विरोध-प्रदर्शन हुआ था। आरोप है कि कथित रूप से इत्तेहाद-ए-मिल्लत काउंसिल के अध्यक्ष मौलाना तौकीर रजा और एक अन्य व्यक्ति ने इस्लामिया इण्टर कॉलेज में लोगों को एकत्र करने के लिये उकसाया। इसके बाद जुटी भीड़ ने विवादित और भड़काऊ नारे लगाये।

कोर्ट की सख्त टिप्पणी

जमानत याचिका पर सुनवाई के दौरान हाईकोर्ट ने कहा कि इस तरह के नारे और कृत्य लोकतांत्रिक विरोध नहीं, बल्कि समाज में भय और अराजकता फैलाने का प्रयास हैं। अदालत ने माना कि प्रथम दृष्टया आरोपी की भूमिका गम्भीर है और ऐसे मामलों में जमानत देना न्यायहित में नहीं होगा। इसी आधार पर रिहान की जमानत अर्जी खारिज कर दी गयी।

शीत ऋतु में तुलसी और अजवाइन का काढ़ा

ठण्ड में तुलसी और अजवाइन का काढ़ा शरीर को कई स्वास्थ्य लाभ देता है। इनमें मौजूद प्राकृतिक गुण शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाकर सर्दी जुकाम को दूर करने में सहायता करते हैं। इनका काढ़ा शरीर को डिटॉक्स कर वजन घटाने में भी सहायक है। तुलसी में एण्टीऑक्सीडेन्ट और एण्टीबैक्टीरियल गुण होते हैं जो शरीर को ठण्ड में होने वाले नुकसान से बचाते हैं। अजवाइन आँतों को स्वस्थ रखने के साथ ही शरीर से विषाक्तता को कम करने में मदद करती है जिससे मोटापा कम होता है। तुलसी और अजवाइन के काढ़े का सेवन करना श्वसन संक्रमण को दूर करने, बन्द नाक को खोलने और सिरदर्द के लक्षणों में राहत दिलाने में सहायक होता है। इसे बनाने के लिये पानी में तुलसी के पत्ते, अजवाइन, अदरक, काली मिर्च को उबालें और फिर छानकर इसमें शहद या नींबू मिलाकर सेवन करें। इससे गले की खराश और कफ में आराम मिलता है। इस काढ़े की तासीर बहुत गरम होती है इसलिये गर्भवती महिलाओं और डिहाइड्रेशन के लोगों को इसका सेवन चिकित्सक की सलाह से ही करना चाहिये।

युवा शक्ति से ही सशक्त भारत का निर्माण सम्भव : डॉ. मोहन भागवत

सिलीगुड़ी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सरसंघचालक डॉ. मोहन जी भागवत ने कहा कि युवा शक्ति ही राष्ट्र निर्माण की वास्तविक धुरी है। भारत आज तेजी से वैश्विक गतिविधियों का केन्द्र बनता जा रहा है और विविधता, अस्थिरता व वैचारिक संकट से जूझ रही दुनिया को आने वाले समय में भारत के मार्गदर्शन की आवश्यकता पड़ेगी। उन्होंने विश्वास जताया कि भारत पुनः विश्वगुरु के रूप में अपनी भूमिका निभायेगा।

बंगाल के सिलीगुड़ी पहुँचे डॉ. भागवत ने उत्तर बंगाल के आठ जिलों और पड़ोसी राज्य सिक्किम से आये लगभग 7500 युवक-युवतियों के युवा सम्मेलन को सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि स्वयं को हिन्दू कहने वालों को संगठित होने की आवश्यकता है। भारत की भक्ति के बिना हिन्दुत्व की भावना अधूरी है। संघ बीते 100 वर्षों से निस्वार्थ भाव से देश सेवा में लगा हुआ है। इस दौरान उसे उपेक्षा, विरोध और आक्रमण का भी सामना करना पड़ा, लेकिन संगठन कभी झुका नहीं और निरन्तर आगे बढ़ता रहा।

संघ प्रमुख ने कहा कि संगठन का विस्तार भले ही बड़ा हो गया हो, लेकिन उसका लक्ष्य देश के अन्तिम व्यक्ति तक पहुँचना और उसे राष्ट्र निर्माण से जोड़ना है। उन्होंने युवाओं से संविधान पढ़ने और समझने का आह्वान करते हुए कहा कि भारतीय संविधान हमारे पूर्वजों की चेतना, प्राचीन संस्कृति और परम्पराओं को जीवित रखता है।

डॉ. भागवत ने कहा कि भाषा, पहनावा, खान-पान और आराध्य देव अलग-अलग हो सकते हैं, लेकिन संस्कृति और परम्परा के आधार पर सभी सनातनी हिन्दू हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि समाज और व्यवस्था के निर्माण से पहले व्यक्ति का निर्माण आवश्यक है। जब व्यक्ति जागरूक और कर्तव्यनिष्ठ बनेगा, तभी समाज मजबूत होगा।

उन्होंने यह भी कहा कि जब-जब देश पर संकट आया है, तब-तब समाज स्वतः जागृत हुआ है और उसने चुनौतियों का सामना किया है। कार्यक्रम में सह सरकार्यवाह रामदत्त चक्रधर, उत्तर बंगाल प्रान्त संघचालक हृषिकेश साहा सहित संघ के कई वरिष्ठ पदाधिकारी उपस्थित रहे।

हिन्दू धर्म किसी एक मत या मजहब का नाम नहीं : डॉ. कृष्ण गोपाल

बरेली। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तत्वावधान में आयोजित संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए संघ के सह सरकार्यवाह डॉ. कृष्ण गोपाल ने कहा कि हिन्दू धर्म और संस्कृति अनन्त विविधता को एक साथ लेकर चलने का सामर्थ्य रखता है। अध्यात्म हिंदू धर्म और संस्कृति की सबसे बड़ी शक्ति है जो समाज में पारस्परिक समन्वय, सामंजस्य और प्रेम स्थापित करने का माध्यम है।

उन्होंने कहा कि हिन्दू धर्म किसी एक मत, मजहब या पंथ का नाम नहीं है बल्कि अनेक मत और मजहबों को खुद में समाहित किए हुए है। गोपाल जी ने कहा कि आज विश्व अनेक प्रकार की समस्याओं से जूझ रहा है उनका समाधान तमाम विद्वान भारतीय संस्कृति और हिन्दू परम्पराओं में ढूँढ रहे हैं। विश्व हमारी ओर आशा भरी दृष्टि से देख रहा है हमें उनके मार्गदर्शन के लिये स्वयं को तैयार करना होगा। हिन्दू धर्म ने सदैव विविधता और विभिन्नता का सम्मान करते हुए इसे स्वीकार किया है।

राष्ट्रपति भवन में अलंकृत हुई 21 वीरों की शौर्य गाथाएँ

नयी दिल्ली। भारत के सैन्य शौर्य और राष्ट्रगौरव को समर्पित एक ऐतिहासिक पहल के तहत राष्ट्रपति भवन में परमवीर दीर्घा का उद्घाटन किया गया। विजय दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने इस दीर्घा का विधिवत लोकार्पण किया। जिन गलियारों में कभी ब्रिटिश काल के एड्स-डी-कैम्प की तस्वीरें लगी थीं, वहाँ अब देश के सर्वोच्च सैन्य सम्मान परमवीर चक्र से अलंकृत 21 वीरों की शौर्य गाथाएँ सजी हैं।

यह दीर्घा औपनिवेशिक विरासत से स्वदेशी गौरव की ओर एक सशक्त कदम मानी जा रही है। दशकों तक राष्ट्रपति भवन की दीवारों पर ब्रिटिश सैन्य अधिकारियों के चित्र देश की गुलामी के अतीत की याद दिलाते थे। अब उन्हीं स्थानों पर भारत माता के सपूतों की तस्वीरें और उनके अदम्य साहस की कहानियाँ प्रदर्शित की गयी हैं। यह बदलाव केवल भौतिक नहीं, बल्कि भारत के मानसिक वि-उपनिवेशीकरण की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण पहल है।

परमवीर दीर्घा में मेजर सोमनाथ शर्मा से लेकर कैप्टन विक्रम बत्रा तक, सभी परमवीर चक्र विजेताओं के जीवन और बलिदान को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है। प्रत्येक वीर के साहसिक कृत्य, युद्धभूमि में उनके नेतृत्व और राष्ट्र के लिये दिये गये सर्वोच्च बलिदान का विवरण यहाँ देखा जा सकता है। राष्ट्रपति भवन आने वाले आगंतुकों के लिये यह दीर्घा अब प्रेरणा का केन्द्र बनेगी। यह न केवल भारतीय सेना के प्रति सम्मान और कृतज्ञता का प्रतीक है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों में राष्ट्रवाद, कर्तव्य और बलिदान की भावना को भी मजबूत करेगी।

मिट्टी के मोतियों से आत्मनिर्भरता की रोशनी

वाराणसी। मिट्टी को आकार देकर आत्मनिर्भरता की मिसाल गढ़ने की यह कहानी किसी बड़े उद्योग की नहीं, बल्कि गाँव की उन महिलाओं की है, जो घर की चौखट से ही अपनी मेहनत और हुनर के दम पर आजीविका कमा रही हैं। वाराणसी के कन्दवा गाँव की महिलाएँ मिट्टी से झूमर में लगने वाले मोती बनाकर न केवल अपनी आय बढ़ा रही हैं, बल्कि अन्य महिलाओं के लिये भी प्रेरणा बन रही हैं।

कन्दवा गाँव की 35-40 वर्ष की रामपणि और संजीरा इसी बदलाव की सशक्त उदाहरण हैं। उनके घर के बाहर पारम्परिक आवा लगा है, जहाँ गोबर के कण्डों से आग जलाकर मिट्टी के दीये और बर्तन पकाये जाते हैं। इसी प्रक्रिया के दौरान वे झूमर में इस्तेमाल होने वाले मिट्टी के मोती भी तैयार करती हैं। यह काम पूरी तरह हस्तनिर्मित होता है, जिसमें धैर्य और बारीक कारीगरी की जरूरत होती है।

रामपणि सरसों के तेल और कंघी की मदद से मिट्टी के छोटे-छोटे मोतियों पर सुन्दर आकृतियाँ उकेरती हैं। संजीरा बताती हैं कि ये मोती 15 रुपये प्रति सैकड़ा के हिसाब से बिक जाते हैं। घर का काम निपटाने के बाद दोनों महिलाएँ दिन का समय इसी काम में लगाती हैं, जिससे उन्हें हर महीने लगभग 4,000 से 6,000 रुपये तक की आमदनी हो जाती है। इस काम से गाँव की करीब 200 से अधिक महिलाएँ भी जुड़ी हुई हैं, जिनकी रोजी-रोटी इसी कारीगरी से चल रही है।

रामपणि बताती हैं कि इन मोतियों से तैयार झूमर, जिन्हें स्थानीय भाषा में टांगल कहा जाता है, बाजार में 150 से 300 रुपये तक में बिकते हैं। मिट्टी से बनी यह कला न केवल सुन्दर है, बल्कि ग्रामीण महिलाओं के लिये सम्मानजनक आजीविका का मजबूत आधार भी बन रही है।

ऐसे बनते हैं मिट्टी के मोती

सबसे पहले दीया या पुरवा बनाने वाली मिट्टी को पानी में भिगोकर अच्छी तरह गूँथा जाता है। इसके बाद हाथों से छोटी-छोटी गोलियाँ बनायी जाती हैं। इन गोलियों पर कंघी या साँचे की सहायता से बारीक डिजाइन उकेरी जाती है। फिर सूजे से छेद किया जाता है, ताकि धागे में पिरोया जा सके। सूखने के बाद मोतियों को रंगा जाता है और झूमर में पिरोने के लिये तैयार किया जाता है।

उपासना किसी की भी करें, मानवता व आपसी सद्भाव न छोड़ें

सन्तकबीरनगर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले ने आस्था, मानवता और सामाजिक एकता को लेकर कहा कि उपासना किसी भी पद्धति से की जाये, लेकिन मानवता और आपसी सद्भाव नहीं छूटना चाहिये। उन्होंने कहा कि नमाज पढ़ने वाले यदि सूर्य नमस्कार करें तो इसमें कोई बुराई नहीं है। सूर्य नमस्कार और प्राणायाम जैसी परम्पराएँ केवल किसी एक समुदाय तक सीमित नहीं हैं, बल्कि समस्त मानव जाति के स्वास्थ्य और कल्याण से जुड़ी हैं।

होसबाले ने कहा कि भारत की सांस्कृतिक परम्पराएँ समन्वय और सह-अस्तित्व की भावना पर आधारित रही हैं। सूर्य को ऊर्जा और जीवन का स्रोत मानकर उसके वन्दना की परम्परा हिन्दू समाज ने विकसित की, लेकिन यह किसी एक धर्म तक सीमित नहीं है। उन्होंने सवाल उठाया कि यदि कोई व्यक्ति नमाज पढ़ता है और नदी या प्रकृति की पूजा करता है तो आपत्ति क्यों होनी चाहिये, उसी तरह सूर्य नमस्कार करने में भी आपत्ति का कोई कारण नहीं है।

हिन्दू सम्मेलन को संबोधित करते हुए उन्होंने चिन्ता जतायी कि देश में धर्म, भाषा और जाति के नाम पर आपसी टकराव बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि यदि समाज मजहब के नाम पर लड़ता रहेगा तो इसका लाभ किसी तीसरे को मिलेगा। जहाँ एकता होती है, वहीं शक्ति और जागरूकता आती है। "हिन्दू जागेगा तो मानव जागेगा" इस सन्देश के साथ उन्होंने सामाजिक समरसता पर जोर दिया। सन्तकबीरनगर में संवाद कार्यक्रम के दौरान होसबाले ने 1947 के विभाजन का उल्लेख करते हुए कहा कि मजहब के नाम पर बंटवारे का दंश देश पहले ही झेल चुका है। आज आवश्यकता इस बात की है कि आस्था के नाम पर वैमनस्य न फैलाया जाये। उन्होंने नागरिक कर्तव्यों, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक जिम्मेदारियों पर भी जोर दिया।

काशी की तरह बनेगा लोधेश्वर महादेवा कारिडोर

बाराबंकी। उत्तर भारत के प्रमुख शिव तीर्थों में शामिल लोधेश्वर महादेवा धाम अब काशी विश्वनाथ कॉरिडोर की तरह विकसित किया जा रहा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के ड्रीम प्रोजेक्ट के रूप में इस महत्त्वाकांक्षी योजना ने वर्ष 2025 में गति पकड़ ली है। महादेवा कारिडोर परियोजना को वर्ष 2027 तक पूर्ण करने का लक्ष्य रखा गया है, जबकि वर्ष 2026 में इसका भव्य स्वरूप श्रद्धालुओं के सामने आने लगेगा। लोधेश्वर महादेवा कारिडोर लगभग 4.7 हेक्टेयर क्षेत्रफल में प्रस्तावित है। इसकी डिजाइन प्रख्यात वास्तुविद जय कार्तिकेय ने तैयार की है, जिन्होंने अयोध्या में श्रीराम मन्दिर परिसर के बाहरी हिस्से की रूपरेखा भी बनायी थी। परियोजना में अध्यात्म, पौराणिक परम्पराओं और आधुनिक पर्यटन सुविधाओं का समन्वय देखने को मिलेगा। प्रदेश सरकार की इस परियोजना की कुल अनुमानित लागत करीब 175 करोड़ रुपये है।

इंटरनेट, एआई और सोशल मीडिया के मकड़जाल में फँसता समाज

आज बिना इन्टरनेट और कृत्रिम बुद्धि के जीवन की कल्पना करना असम्भव है। इन दोनों ने मिलकर सामान्य जीवन को पहले की तुलना में सरल कर दिया है। पहले जिन कामों में घण्टों लगा करते थे, वे अब एक क्लिक में हो जाते हैं। दैनिक जीवन की आवश्यकताओं, नागरिक प्रशासन, शिक्षा, व्यवसाय, चिकित्सा, न्यायिक प्रक्रिया, फैशन, मनोरंजन ऐसा कोई क्षेत्र नहीं बचा है, जो इससे अछूता हो।

जीवन को सरल बनाने और गति देने वाले इन्टरनेट और कृत्रिम बुद्धि के दूसरे पहलू भी हैं, जो साइबर अपराध, स्वास्थ्य दुष्प्रभाव, राजनैतिक उठापटक, सामाजिक मर्यादाओं के गिरावट बढ़ा रहे हैं। बड़ी संख्या में लोग तथा व्यवस्थाएँ इनके मकड़जाल में फँसकर छटपटा रहे हैं। जिस तीव्रता से इन्टरनेट और कृत्रिम बुद्धि का सामान्य जीवन में दखल बढ़ रहा है, उतनी ही तेजी से इसके नकारात्मक प्रभाव समाज को अपनी चपेट में ले रहे हैं।

भारत में स्मार्टफोन उपयोगकर्ताओं की संख्या 70 करोड़ से ज़्यादा है, जो विश्व में दूसरे स्थान पर है, जहाँ 85% से ज़्यादा घरों में कम से कम एक स्मार्टफोन है। युवाओं (15-29 आयु वर्ग) में इसकी पहुँच लगभग सार्वभौमिक है। 2026 तक यह संख्या बढ़कर 1 अरब तक पहुँचने का अनुमान है। भारत में इन्टरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या 2024 में लगभग 88.6 करोड़ तक पहुँच गयी थी। 2025 में 90 करोड़ पार करने का अनुमान है। स्वाभाविक रूप से यह एक बड़ी जनसँख्या है, जो किसी न किसी सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर भी सक्रिय है। जिसका उपयोग सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही रूपों में किया जा सकता है और किया भी जा रहा है।

भारत में ही शिक्षा, प्रौद्योगिकी, व्यवसाय, नागरिक प्रशासन की दक्षता में विकास से लेकर समाज में अश्लीलता और अनुशासनहीनता फैलाने, धरना-प्रदर्शन करने, दंगे भड़काने, राष्ट्र विरोधी गतिविधियों और विचारों को भड़काने तक इन्टरनेट, एआई और सोशल मीडिया का सकारात्मक और नकारात्मक उपयोग देखा जा रहा है। यह एक दुधारी तलवार है, जो अब घातक होती जा रही है।

इण्टरनेट मीडिया और ओटीटी प्लेटफार्म पर अभद्रता, फेक न्यूज, हेट स्पीच, अश्लीलता, राष्ट्र विरोधी कन्टेट स्ट्रीमिंग की बाढ़ सी आ गयी है। ओटीटी पर ऐसे-ऐसे कन्टेट परोसे जा रहे हैं जो भारत की सनातन संस्कृति की छवि को आघात पहुँचाने के साथ में इनसे जुड़े महानुभावों की छवि भी बिगाड़ रहे हैं। कुछ दिनों पूर्व नेत्रहीन सन्त रामभद्राचार्य जी के विरुद्ध आपत्तिजनक कन्टेट प्रसारित किया जा रहे था जिसे हाईकोर्ट के आदेश के बाद हटाया गया। राजनैतिक दल और उनके अनुयायी एक दूसरे की छवि खराब करने के लिये भी एआई जेनरेटड वीडियो बड़ी संख्या में प्रसारित करवा रहे है। विगत दिनों हुए बिहार विधानसभा चुनाव में भी एआई जनरेटेड आपत्तिजनक वीडियो पोस्ट की गयी थी। दिवंगत अभिनेता धर्मेंद्र के निधन सम्बन्धी एआई जनरेटेड वीडियो बनायी गयी।

कृषि कानूनों के विरोध में हुए किसान आन्दोलन के दौरान सोशल मीडिया का दुरुपयोग करके जनमानस को भड़काने का प्रयास किया गया। शाहीन बाग के धरने और दिल्ली दंगों में सोशल मीडिया ने प्रमुख भूमिका निभायी। आई लव मोहम्मद के प्रदर्शनों के पीछे भी सोशल मीडिया रहा। इस पूरी प्रक्रिया में डीपफेक आदि का भरपूर उपयोग होता है। सोशल मीडिया-ऐसे कंटेट से भरा पड़ा है जो धर्मान्तरण और लव जिहाद के लिये प्रयोग किया जा रहा है। जिसके पास स्मार्ट फोन है वो अपना यू-ट्यूब चैनल चला सकता है और कुछ भी बकवास कर सकता है।

ओटीटी पर महिलाओं और बच्चों का उपयोग करके अत्यन्त असंवेदनशील सामग्री परोसी जा रही है। कुछ दिन पूर्व ही सुप्रीम कोर्ट ने कई सोशल मीडिया इन्फलुएंसर को कड़ी फटकार लगाकर अपत्तिजनक सामग्री को इंटरनेट से हटाने का आदेश दिया था। अपराधी प्रवृत्ति के लोग जमकर इन्टरनेट, एआई और सोशल मीडिया का दुरुपयोग कर रहे हैं। अपराधी सोशल मीडिया व अन्य साइट से वीडियो चोरी करते हैं और एआई की मदद से उसमें मिक्सिंग कर अपराध में सहायक वीडिओ विकसित कर लेते हैं। इन्हें रोकने में पुलिस विभाग की तकनीक भी नाकाम हो रही है। यदि यह तकनीक सही दिशा में नहीं की गयी तो, मानवता का विनाश सुनिश्चित है।

एआई के दुरुपयोग से न्यायपालिका भी परेशान -

पूर्व मुख्य न्यायाधीश बी.आर.गवई ने अपने कार्यकाल के दौरान एक मामले की सुनवाई करते हुए कहा था कि जज भी एआई जनरेटेड तस्वीरों के शिकार हो रहे हैं। अब समय आ गया हे कि एआई को नियंत्रित करने की पहल हो। उन्होंने कहा कि आज समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग किसी न किसी रूप से एआई के दुरुपयोग से परेशानी अनुभव कर रहा है। उनका था कि एआई को नियंत्रित करना एक नीतिगत मामला है इस पर कार्यपालिका को कार्य करने की आवश्यकता है।

इंटरनेट मीडिया के लिए स्वतंत्र नियामक अपरिहार्य : सुप्रीम कोर्ट

सुप्रीम कोर्ट में वर्तमान प्रधान न्यायाधीश सूर्यकान्त की खंडपीठ ने एक मामले कि सुनवाई करते हुए कहा कि आनलाइन प्लेटफार्म पर अश्लील, आपत्तिजनक या अवैध सामग्री को नियंत्रित करने के लिए एक तटस्थ, स्वतंत्र और स्वायत्त नियामक की आवश्यकता है। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने अदालत को बताया कि दिव्यांग व्यक्तियों के खिलाफ अपमानजनक टिप्पणियों और उनका मजाक उड़ाने वाले जैसे मामलो से निपटने के लिए कुछ दिशा निर्देश तैयार किए जा रहे हैं। अदालत ने सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय से कहा कि वह दिशा निर्देशो को चर्चा के लिए सार्वजनिक करे।

ऑनलाइन स्पेस में दिव्यांगों की गरिमा की रक्षा के लिए एक कड़े कानून की आवश्यकता पर बल देते हुए अदालत ने कहा कि वह दिव्यांगो और दुर्लभ आनुवांशिक विकारो से ग्रस्त व्यक्तियों का मजाक उड़ाने वाली टिप्पणियों को दंडनीय अपराध बनाएं जैसा कि एससी-एसटी अधिनियम के तहत किया गया है। प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत और जस्टिस जोयमाल्या बागची की पीठ ने कहा कि एससी-एसटी अधिनियम में जातिसूचक टिप्पणियों को अपराध माना गया है और सजा का प्रावधान है। ❖

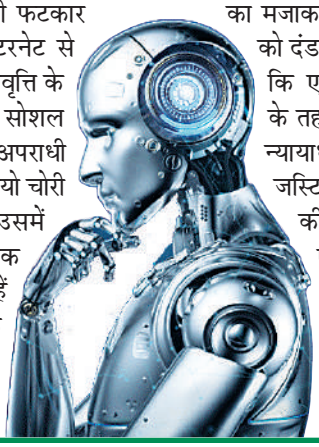

राजस्थान के अरावली क्षेत्र में खनन पर सुप्रीम रोक

नयी दिल्ली। अरावली पर्वत माला को लेकर लम्बे समय से चल रहे विवाद के बीच केन्द्र सरकार ने बड़ा फैसला लिया है। केन्द्र ने सभी राज्यों में अरावली क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले खनन पट्टों को निरस्त कर दिया है। साथ ही राज्य सरकारों को नये खनन पट्टे जारी करने पर भी पूरी तरह रोक लगा दी गयी है। सरकार ने साफ किया है कि यह प्रतिबन्ध पूरे अरावली भू-भाग पर समान रूप से लागू होगा।

संरक्षित क्षेत्र का होगा विस्तार

पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने स्पष्ट किया कि अरावली की पर्वत श्रृंखला की अखण्डता बनाये रखने के लिये संरक्षित क्षेत्र का दायरा बढ़ाया जायेगा। मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों के अनुसार, यह कदम गुजरात से लेकर राजस्थान, हरियाणा और एनसीआर तक फैली अरावली की सतत पर्वत श्रृंखला को बचाने के उद्देश्य से उठाया गया है। अवैध खनन पर पूरी तरह अंकुश लगाना इस निर्णय का मुख्य लक्ष्य है।

अवैध खनन रोकने पर जोर

मंत्रालय ने कहा कि पर्यावरणीय नियमों का सख्ती से पालन सुनिश्चित किया जायेगा। जो खनन गतिविधियाँ पहले से चल रही हैं, उन्हें भी अतिरिक्त प्रतिबन्धों के साथ कड़े नियमन में लाया जायेगा। सरकार का कहना है कि अरावली का संरक्षण मरुस्थलीकरण रोकने, जलभण्डारों के पुनर्भरण, जैव विविधता संरक्षण और पर्यावरणीय सन्तुलन के लिये बेहद आवश्यक है।

आईसीएफआरई करेगा क्षेत्रों की पहचान

केन्द्र सरकार ने भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद (आईसीएफआरई) को निर्देश दिया है कि वह पूरे अरावली क्षेत्र में उन अतिरिक्त इलाकों की पहचान करे, जहाँ खनन पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया जाना चाहिये। इसके साथ ही आईसीएफआरई को अरावली के लिये विज्ञान आधारित खनन प्रबन्धन योजना तैयार करने का जिम्मा सौंपा गया है। इस योजना को सार्वजनिक डोमेन में रखकर सभी हितधारकों से

सुझाव भी लिये जायेंगे।

पुनर्वास और संरक्षण की योजना

इस व्यापक योजना के तहत पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्रों की पहचान की जायेगी और क्षतिग्रस्त इलाकों के पुनर्वास के उपाय भी तय किये जायेंगे। सरकार का कहना है कि दीर्घकालिक संरक्षण के लिये ठोस और व्यावहारिक रणनीति बनायी जायेगी।

चारों वेदों के मूल मंत्र होंगे संरक्षित

- **सुरेश वाडेकर की आवाज में हो रही रिकॉर्डिंग**

वाराणसी। भारतीय सनातन परम्परा के मूल आधार चारों वेदों के संरक्षण की दिशा में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय ने एक ऐतिहासिक पहल शुरू की है। विश्वविद्यालय द्वारा चारों वेदों के मूलपाठ को सस्वर संरक्षित करने के उद्देश्य से मुम्बई में मंत्रों की रिकॉर्डिंग करायी जा रही है। इस महत्वपूर्ण कार्य के लिये बॉलीवुड के प्रसिद्ध गायक सुरेश वाडेकर अपनी आवाज दे रहे हैं। यह परियोजना वेदों की मौखिक परम्परा को आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित पहुँचाने की दिशा में मील का पत्थर मानी जा रही है।

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के वेद विभाग के सहायक आचार्य डॉ. विजय कुमार शर्मा के संयोजकत्व में 'श्रुतिनिःस्वनः' कार्यक्रम के अन्तर्गत चारों वेदों के मूलपाठ का संरक्षण किया जा रहा है। यह रिकॉर्डिंग विंग्स एण्टरटेनमेन्ट लिमिटेड स्टूडियो, मुम्बई/दुबई में हो रही है। विश्वविद्यालय जल्द ही विंग्स एण्टरटेनमेन्ट लिमिटेड और यूट्यूब चैनल 'भजन इण्डिया' के साथ एमओयू (समझौता ज्ञापन) भी करेगा, जिससे वेदों के मंत्रों को वैश्विक मंच पर प्रसारित किया जा सके।

डॉ. विजय कुमार शर्मा ने बताया कि प्राचीन काल में वेदों की 1131 शाखाएँ प्रचलन में थीं, लेकिन समय के साथ अध्ययन-अध्यापन में कमी के कारण आज केवल चारों वेदों की 13 शाखाएँ ही शेष रह गयी हैं। वेदों की मौखिक परम्परा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि हजारों वर्षों बाद भी उनके उच्चारण और स्वर में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। इसी कारण ऋग्वेद को यूनेस्को ने विश्व धरोहर के रूप में मान्यता दी है। कुलपति प्रो. बिहारी लाल शर्मा के प्रयासों से इस परम्परा को पूरे विश्व पटल पर स्थापित करने की दिशा में यह परियोजना आगे बढ़ाई जा रही है। कुलपति के निर्देशानुसार 15 से 18 दिसम्बर के बीच डॉ. विजय कुमार शर्मा ने विंग्स एण्टरटेनमेन्ट लिमिटेड के संस्थापक पंकज रोहरा और गायक सुरेश वाडेकर से मुलाकात कर इस परियोजना पर विस्तृत चर्चा की। इस दौरान कुछ वैदिक मंत्रों की रिकॉर्डिंग भी पूरी की गयी।

कुलपति प्रो. शर्मा ने कहा कि विश्वविद्यालय वेदों के संरक्षण और प्रचार-प्रसार से जुड़े प्रत्येक महनीय कार्य में पूर्ण सहयोग देगा। आधुनिक तकनीक के माध्यम से वेदों की सस्वर परम्परा को जन-जन तक पहुँचाना समय की आवश्यकता है। यह प्रयास निरन्तर जारी रहेगा और भारतीय सांस्कृतिक धरोहर को वैश्विक स्तर पर नयी पहचान दिलायेगा।

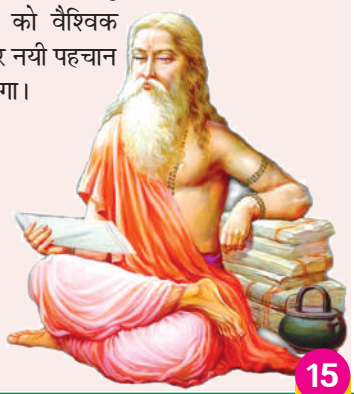

अवधी के साहित्यकार बलभद्र प्रसाद दीक्षित "पढ़ीस"

बलभद्र प्रसाद दीक्षित "पढ़ीस" आधुनिक अवधी साहित्य के उन्नायक हैं। पढ़ीस जी आधुनिक अवधी के जितने समर्थ कवि हैं उतने ही समर्थ आधुनिक हिन्दी के कथाकर भी हैं। समाज सुधारक, शिक्षाविद और यथार्थवादी चिन्तक के रूप में भी उनकी छवि प्रेरणादायक रही है। निराला, अमृतलाल नागर और रामविलास शर्मा आदि रचनाधर्मियों ने उनकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है।

वह अवध के पहले किसान कवि थे जिन्होंने अभावों से लेकर अत्यधिक प्रभावशाली दरबारों में रहकर सामान्यजन की समस्याओं को साहित्य के माध्यम से प्रखरता के साथ प्रस्तुत किया। वह तत्कालीन समाज के महत्वपूर्ण चिन्तक के रूप में देखे जाते हैं। भारतीय ग्रामीण जीवन, स्त्री, मजदूर और किसान आदि को अपनी भरपूर व्यंजना शक्ति के साथ पढ़ीस ने रचनाओं में जीवन्त किया है। अवध के स्वाभिमान का ऐसा महत्वपूर्ण कवि ही आधुनिक अवधी को साहित्य का नया प्रगतिचेता रूप दे सकता था।

उन्होंने सर्वप्रथम आकाशवाणी के माध्यम से गाँव और किसान की चिन्ताओं और समस्याओं को प्रस्तुत किया था। अंग्रेजों के शासनकाल में जब आकाशवाणी को रेडियो कहा जाता था और उसे लखनऊ में उर्दू स्टेशन मान लिया गया था उस युग में पढ़ीस जी के प्रयासों से इतना हुआ कि आकाशवाणी लखनऊ के तत्कालीन अधिकारी आकाशवाणी की आवाज गाँव-गाँव तक पहुँचाने की बात पर सहमत हुए।

पढ़ीस ग्रंथावली के अनुसार लखनऊ केन्द्र में पहला देहाती कार्यक्रम "पंचायत घर" उन्ही की देन थी। पढ़ीस जी के आकाशवणी में आने से भाषा में बदलाव आया। हिन्दी के उच्चारण आदि के लिये अधिकारी पढ़ीस जी की राय लेने लग गये थे। वह संचार माध्यम की भाषा के सन्दर्भ व्यक्ति के रूप में चर्चित हो गये थे। पढ़ीस जी निराला, रामविलास शर्मा, अमृतलाल नागर और यशपाल के सान्निध्य में रहते हुए अपने व्यक्तित्व और कृतित्व को निखारने में लगे थे।

उनकी कहानी संग्रह ला मजहब प्रकाशित हो चुका था और माधुरी जैसी प्रतिष्ठित कहानी की पत्रिका में उनकी रचनाएँ लगातार प्रकाशित हो रही थीं। पढ़ीस जी ने समय पर आकाशवाणी जैसे श्रव्य माध्यम का हिन्दी के विकास

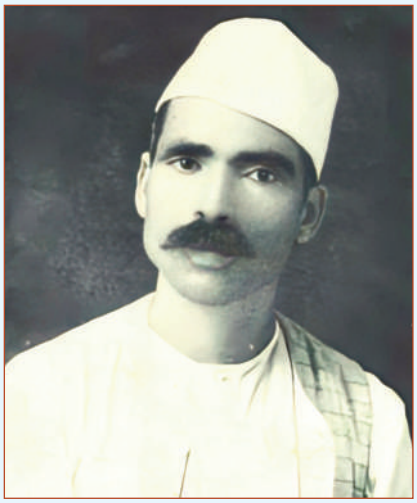

हेतु बेहतरीन ढंग से जनहित के लिये उपयोग किया। आकाशवाणी के लिये अवधी के पहले कार्यक्रम पंचायत घर के जनक के रूप में वे सदैव याद किये जाते रहेंगे।

पढ़ीस जी अपनी कविताओं में सभी को समान रूप से देखा करते थे। उनकी कविताओं में कई रंग समाहित थे। उनका गाँव गोमती नदी के किनारे बसा था। नदी है तो जल की सम्पन्नता है और बाढ़ की विभीषिका भी सामने आती होगी यही कारण है कि बालू के टीलों की बात, खेतों की फसलों की अनन्तराशि, फल-फूल, बाग और जंगल आदि के नैसर्गिक बिम्ब मिलते हैं। विशेष बात यह है कि पढ़ीस जी ग्राम्य सौन्दर्य कवि के रूप में दिखायी देते हैं। उनकी लम्बी कविताओं में कहानियाँ भी हैं अर्थात वे आख्यानधर्मी लम्बी कविताएँ भी लिखते हैं। शीर्षक कविता चकल्लस का कथ्य भी पूरनमासी को होने वाले मेले को समर्पित है। अब इस प्रकार के मेले उन दिनों ग्राम्य जीवन में बहुत महत्वपूर्ण होते थे।

स्वतंत्रता संग्राम की लड़ायी के समय अवधी के कवि बलभद्रप्रसाद दीक्षित जी ने अपनी नौकरी भी छोड़ दी थी क्योंकि उनके आदर्श महात्मा गांधी थे। उन्होंने लोगों को मातृभाषा से प्रेम करने की सीख देने से पहले खड़ी बोली अंग्रेजी, फारसी व उर्दू पर अपने भरपूर अधिकार के बावजूद उन्होंने अपने कवि कर्म के लिये अपनी मातृभाषा अवधी को चुना। उन्होंने अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध अपनी रचनाओं के माध्यम से देश की आजादी के लिये जनमानस में क्रान्ति लाने का काम किया। उनकी रचनाएँ लखनऊ विश्वविद्यालय सहित कई अन्य विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाती है।

चकल्लस पर अंग्रेजों ने लगाया था प्रतिबन्ध

बलभद्र प्रसाद दीक्षित जी द्वारा लिखित चकल्लस पुस्तक में कई कविताएँ ऐसी भी हैं जिन्होंने अंग्रेजी सत्ता को चुनौती देते हुए देश की स्वतंत्रता के लिये जनमानस में क्रान्तिभाव लाने का कार्य किया। चकल्लस पुस्तक का प्रकाशन 1933 में एक बार हो चुका उसके बाद अंग्रेज सरकार ने इस पर प्रतिबन्ध लगा दिया और उसका दोबारा प्रकाशन नहीं हो सका। संग्रह चकल्लस की भूमिका महाकवि निराला जी ने लिखी थी।

पढ़ीस जी के काव्य- उनकी प्रमुख पद्य रचनाओं के नाम तू, अमर, दिखला देते एक बार, हूक, चन्द्र खिलौना, लजीली आदि है।

पढ़ीस जी प्रमुख कहानियाँ हैं- क्या से क्या, काजी साहब, चमार भाई, कंगले, कांग्रेसी भाई। इनकी कहानियों को पढ़कर स्पष्ट हो जायेगा कि वे समाजिक मतभेद, छुआछूत, साम्राज्यवाद के काल प्रबल आलोचक व सामाजिक समरसता के प्रबल पक्षधर थे।

हिन्दी संस्थान लखनऊ ने कराया था पढ़ीस ग्रंथावली का प्रकाशन

पढ़ीस ग्रंथावली का प्रकाशन हिन्दी संस्थान लखनऊ द्वारा कराया गया। इस ग्रंथावली में पढ़ीस द्वारा लिखी गयी कविताएँ जो किसी अन्य पुस्तक में प्रकाशित व अप्रकाशित सम्पूर्ण रचनओं पर भी प्रकाशन डाला गया। इस ग्रंथ में पढ़ीस जी के जीवन परिचय के साथ ही उनकी रचनाओं व किस तरह से बलभद्र प्रसाद दीक्षित का समय बीता और उनका समाज व देश के लिये क्या योगदान रहा इसका समस्त उल्लेख है। पढ़ीस जी का निधन होने पर माधुरी पत्रिका ने वृहद विशेषांक प्रकाशित किया था। ❖

अर्जुन का अहंकार

एक बार अर्जुन को अहंकार हो गया कि वही भगवान के सबसे बड़े भक्त हैं। उनको श्रीकृष्ण ने समझ लिया। एक दिन वह अर्जुन को अपने साथ घुमाने ले गये।

रास्ते में उनकी मुलाकात एक गरीब व्यक्ति से हुई। उसका व्यवहार थोड़ा विचित्र था। वह सूखा भोजन कर रहा था और उसकी कमर से तलवार लटक रही थी।

अर्जुन ने उससे पूछा- आप तो अहिंसा के पुजारी हैं। जीव हिंसा के भय से सूखा भोजन कर अपना गुजारा करते हैं लेकिन फिर हिंसा का यह उपकरण तलवार क्यों आपके साथ है?

व्यक्ति ने जवाब दिया- मैं कुछ लोगों को दण्डित करना चाहता हूँ। आपके शत्रु कौन हैं? अर्जुन ने जिज्ञासा व्यक्त की।

व्यक्ति ने कहा- मैं चार लोगों को खोज रहा हूँ, ताकि उनसे अपना हिसाब चुकता कर सकूँ। सबसे पहले तो मुझे नारद की तलाश है। नारद मेरे प्रभु को आराम नहीं करने देते, सदा भजन-कीर्तन कर उन्हें जागृत रखते हैं। फिर मैं द्रौपदी

पर भी बहुत क्रोधित हूँ। उसने मेरे प्रभु को ठीक उसी समय पुकारा, जब वह भोजन करने बैठे थे। उन्हें तत्काल खाना छोड़ पाण्डवों को दुर्वासा ऋषि के शाप से बचाने जाना पड़ा उसकी धृष्टता तो देखिये। उसने मेरे भगवान को जूठा खाना खिलाया।

आपका तीसरा शत्रु कौन है?- अर्जुन ने पूछा। वह है हृदयहीन प्रह्लाद। उस निर्दयी ने मेरे प्रभु को गरम तेल के कड़ाह में प्रविष्ट कराया, हाथी के पैरों तले कुचलवाया और अन्त में खम्भे से प्रकट होने के लिये विवश किया। और चौथा शत्रु है अर्जुन।

उसकी दुष्टता देखिये। उसने मेरे भगवान को अपना सारथी बना डाला। उसे भगवान की असुविधा का तनिक भी ध्यान नहीं रहा।

कितना कष्ट हुआ होगा मेरे प्रभु को? यह कहते ही व्यक्ति की आँखों में आँसू आ गये। यह देख अर्जुन का घमण्ड चूर-चूर हो गया। उसने श्रीकृष्ण से क्षमा माँगते हुए कहा- मान गया प्रभु, इस संसार में न जाने आपके कितने तरह के भक्त हैं। मैं तो कुछ भी नहीं हूँ।

बाल-प्रश्नोत्तरी

01. दिनकर किसे कहते हैं?
(क) अग्नि (ख) वरुण
(ग) शनि (घ) सूर्य

02. इनमें से किन देवताओं का पहले एक ही शरीर था ?
(क) अश्विनी कुमार
(ख) मित्र और वरुण
(ग) सूर्य और चन्द्रमा
(घ) गणेश और कार्तिकेय

03. अग्निस्नान क्या है?
(क) भस्म से शरीर को शुद्ध करना
(ख) अग्नि में कुदना
(ग) स्वयं से अग्नि प्रज्ज्वलित होना
(घ) पंचाग्नि व्रत

04. वृत्तासुर को किसने मारा था?
(क) विष्णु (ख) इन्द्र
(ग) कार्तिकेय (घ) शिव

05. इनमें से कौन सा अष्टांग योग के अर्न्तगत नहीं आता है?
(क) ध्यान (ख) मंत्र जप
(ग) प्राणायाम (घ) आसन

06. आदिपुराण के रचायिता कौन थे?
(क) वेदव्यास (ख) शंकराचार्य
(ग) जिनसेन (घ) शुकदेव

07. लीलावती किस विषय से सम्बन्धित ग्रन्थ है?
(क) गणित (ख) व्याकरण
(ग) काव्य (घ) वेदान्त

08. पुत्र प्राप्ति के लिये राजा दशरथ ने कौन सा यज्ञ किया था?
(क) वाजपेय (ख) अग्निहोत्र
(ग) सोमयाग (घ) पुत्रेष्टि

09. वनगमन के समय श्रीराम ने जहाँ विश्राम किया था वह पंचवटी अब कहाँ पर स्थित है?
(क) मध्य प्रदेश (ख) महाराष्ट्र
(ग) उत्तर प्रदेश (घ) कर्नाटक

साधना ही मुक्ति का शुभ द्वार है

साधना ही मुक्ति का शुभ द्वार है।
शक्ति ही तो शांति का आधार है।।
जो न दुःख को दुःख मन में मानता,
धूल सुख की खोज में ना छानता,
मोह आकर्षण भरे इस विश्व में,
राह अपने ध्येय की पहिचानता,
दूसरों के हेतु विष को भी जिसे,
पान करना प्रेम से स्वीकार है।।1।।
सूर्य लेकर के नये नित तेज की,
पूर्व में करता प्रखर ध्रुव ध्येय को,
और निज कण-कण जला करके सदा,
दे रहा है त्याग के संदेश को,
दूसरों में प्राण जो भरता रहे,
अस्त भी उसका उदय साकार है।।2।।
ध्येय पूरा हो सके अथवा नहीं,
कर्मवीरों को कभी परवाह नहीं,
कार्य अपने हाथ फल प्रभु हाथ है,
धर्म पर चलना कभी धोखा नहीं
जीत में जाती बदल यह सत्य है,
मार्ग में यदि प्राप्त होती हार है।।3।।
संगठन का कार्य मैला है नहीं,
राह दुर्गम है उजेला है नहीं,
किन्तु जो हर श्वास और प्रश्वास में,
ध्येय का राही अकेला है नहीं,
छोड़ जाये साथ चाहे जो सगे,
राष्ट्र उसकी दृष्टि में परिवार है।।4।।

सही उत्तर : 1(घ), 2(ख), 3(घ), 4(ख), 5(ख), 6(ग), 7(क), 8(घ), 9(ख)

पौष शुक्ल त्रयोदशी-माघ कृष्ण द्वादशी : विक्रम संवत्-2082

व्रत-पर्व

01 शुक्ल पक्ष, त्रयोदशी	रोहिणी प्रदोष व्रत, आंग्लनववर्ष
02 शुक्ल पक्ष, चतुर्दशी	मृगशिरा, पौष पूर्णिमा
03 शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा	आर्द्रा
04 कृष्ण पक्ष, प्रतिपदा	पुनर्वसु
05 कृष्ण पक्ष, द्वितीया	पुष्य
06 कृष्ण पक्ष, तृतीया/चतुर्थी	आश्लेषा अंगारकी चतुर्थी
07 कृष्ण पक्ष, पंचमी	मघा
08 कृष्ण पक्ष, षष्ठी	पूर्वाफाल्गुनी
09 कृष्ण पक्ष, सप्तमी	उत्तराफाल्गुनी
10 कृष्ण पक्ष, सप्तमी/अष्टमी	हस्त कालाष्टमी
11 कृष्ण पक्ष, अष्टमी	चित्रा
12 कृष्ण पक्ष, नवमी	स्वाति
13 कृष्ण पक्ष, दशमी	विशाखा लोहड़ी
14 कृष्ण पक्ष, एकादशी	अनुराधा षटतिला एकादशी
	मकर संक्रांति, माघबिहू, पोंगल
15 कृष्ण पक्ष, द्वादशी	ज्येष्ठा

स्मरणीय तिथियाँ

01 जनवरी (जयन्ती)	सम्पूर्णानन्द, सत्येन्द्रनाथ बोस, शुभा मुद्गल
01 जनवरी (पुण्यतिथि)	शन्ति स्वरूप भटनागर
02 जनवरी (पुण्यतिथि)	बूटा सिंह
03 जनवरी (जयन्ती)	सावित्रीबाई फुले, (पुण्यतिथि) सतीश धवन
04 जनवरी (जयन्ती)	गोपालदास नीरज
04 जनवरी (पुण्यतिथि)	सिंधुताई सपकाल
05 जनवरी (जयन्ती)	कल्याण सिंह, मुरली मनोहर जोशी, परमहंस योगानन्द जी
06 जनवरी (पुण्यतिथि)	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
07 जनवरी (जयन्ती)	बिपिन चन्द्र पाल, चन्द्रशेखर वेंकट रामन, पण्डित विश्वम्भर नाथ, योगेन्द्र बाबा
08 जनवरी (जयन्ती)	साहित्यकार रामकुमार वर्मा
08 जनवरी (पुण्यतिथि)	केशवचन्द्र सेन ब्रह्मसमाज
09 जनवरी (जयन्ती)	हरगोबिन्द खुराना, सुन्दरलाल बहुगुणा
11 जनवरी (पुण्यतिथि)	लाल बहादुर शास्त्री
12 जनवरी (जयन्ती)	स्वामी विवेकानन्द, महर्षि महेश योगी जीजाबाई, डॉ. भगवानदास
14 जनवरी (जयन्ती)	महाश्वेता देवी
14 जनवरी (जयन्ती)	रमानन्दाचार्य

पाक्षिक राशिफल

ज्योतिर्विद पं. दिवाकर त्रिपाठी
निदेशक- उत्थान ज्योतिष संस्थान

मेष राशि-

मनोबल एवं सम्मान में वृद्धि। इस अवधि में ऊर्जा बढ़ी रहेगी। नये काम की शुरुआत के योग हैं। पढ़ायी और प्रतियोगी कार्यों में सफलता मिल सकती है। क्रोध पर नियंत्रण रखें।

वृषभ राशि-

वाणी की तीव्रता वृद्धि। धन सम्बन्धी मामलों में सावधानी रखें। परिवार के साथ समय अच्छा बीतेगा। स्वास्थ्य में हल्की थकान हो सकती है। मानसिक उलझन बढ़ेगी।

मिथुन राशि-

साझेदारी के कार्यो से लाभ। संवाद और मित्रता से लाभ मिलेगा। पढ़ायी व करियर में अच्छे अवसर मिल सकते हैं। शीघ्र से कोई भी निर्णय न लें।

कर्क राशि-

प्रतियोगिता में विजय की स्थिति बनेगी। दूरस्थ यात्रा पर खर्च बढ़ेगा। आँखों की समस्या के कारण तन बढ़ेगा। भावनात्मक रूप से थोड़ा संवेदनशील समय है। परिवार का सहयोग मिलेगा। खर्चों पर ध्यान दें।

सिंह राशि-

सन्तान पक्ष से लाभ होगा। आर्थिक गतिविधियों में सुधार होगा। आत्मविश्वास बढ़ेगा। नेतृत्व के अवसर मिल सकते हैं। मान-सम्मान में वृद्धि होगी, लेकिन अहंकार से बचें।

कन्या राशि-

घरेलू तनाव बढ़ेगा माता के स्वास्थ्य को लेकर चिन्ता बढ़ेगी। मेहनत का फल मिलेगा। पढ़ाई और काम में फोकस अच्छा रहेगा। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।

तुला राशि-

पराक्रम एवं पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। कार्यो में भाग्य का साथ मिलेगा। संतुलन बनाये रखना जरूरी है। रिश्तों में स्पष्ट बातचीत लाभ देगी। कला और रचनात्मक कामों में सफलता।

वृश्चिक राशि-

मनोबल एवं व्यक्तित्व में वृद्धि होगी। पारिवारिक कार्यों में मन लगेगा। पेट की समस्या सम्भव। जिम्मेदारियाँ बढ़ सकती लेकिन सफलता भी मिलेगी। करियर के लिये अच्छा समय।

धनु राशि-

व्यक्तित्व में तीव्रता बढ़ेगी। साझेदारी के कार्यों में मन लगेगा। आय के नये साधन बनेंगे। दाम्पत्य में अवरोध एवं प्रेम सम्बन्धों में तनाव बढ़ेगा। नये विचार आएँगे। करियर में सकारात्मक बदलाव संभव है।

मकर राशि-

दूरस्थ यात्रा पर खर्च बढ़ेगा। प्रतियोगिता एवं मुकदमा में विजय मिलेगा। गुप्त योजनाएँ सफल हो सकती हैं। रिसर्च या गहरे अध्ययन के लिए अच्छा समय। तनाव से बचें।

कुम्भ राशि-

आर्थिक पक्ष मजबूत रहेगा संतान की प्रगति से मन प्रसन्न रहेगा डिग्री एवं अध्ययन के लिए समय अनुकूल रहेगा। मित्रों का सहयोग मिलेगा। तकनीक या विज्ञान से जुड़े लोगों के लिए अच्छा समय।

मीन राशि-

ध्यान और रचनात्मकता बढ़ेगी। भावनाओं में बहकर निर्णय न लें। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। सामाजिक पद प्रतिष्ठा एवं सम्मान को लेकर तनाव बढ़ेगा। हृदय रोग एवं सीने की तकलीफ में वृद्धि होगी।

राष्ट्रीय प्रेरणा स्थल : लखनऊ को मिली एक नयी सांस्कृतिक पहचान

पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी की 101वीं जयन्ती के अवसर पर लखनऊ को एक ऐतिहासिक धरोहर मिली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गोमती नगर विस्तार में निर्मित राष्ट्र प्रेरणा स्थल का भव्य लोकार्पण किया। यह अवसर केवल एक स्मारक के उद्घाटन तक सीमित नहीं था, बल्कि यह राष्ट्रवादी विचारधारा, सांस्कृतिक चेतना और सुशासन की परम्परा को नयी पीढ़ी से जोड़ने का सशक्त प्रयास भी है। इस मौके पर पीएम मोदी ने राष्ट्र निर्माण में अहम भूमिका निभाने वाले तीन महान विचारकों और नेताओं– डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पण्डित दीनदयाल उपाध्याय और अटल बिहारी वाजपेयी की प्रतिमाओं का अनावरण किया।

राष्ट्र प्रेरणा स्थल की परिकल्पना

राष्ट्र प्रेरणा स्थल की परिकल्पना केवल एक स्मारक के रूप में नहीं की गयी, बल्कि इसे एक ऐसे विचार केन्द्र के तौर पर विकसित किया गया है, जहाँ राष्ट्र, समाज और व्यक्ति के बीच सन्तुलन की भावना विकसित हो सके। यह स्थल उन विचारों को समर्पित है जिन्होंने भारत की एकता, अखण्डता और सामाजिक समरसता को मजबूती दी। यहाँ आने वाला हर व्यक्ति देश के प्रति अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों पर आत्ममन्थन कर सके, यही इसकी मूल भावना है।

तीन महापुरुष, एक विचारधारा

इस स्थल का केन्द्र बिन्दु तीन भव्य प्रतिमाएँ हैं। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी को राष्ट्रीय एकता और अखण्ड भारत के प्रतीक के रूप में देखा जाता है। उन्होंने देश की अखण्डता के लिये अपने प्राण न्योछावर किये। पण्डित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद समाज के अन्तिम व्यक्ति तक विकास पहुँचाने की सोच को दर्शाता है। अटल बिहारी वाजपेयी लोकतांत्रिक मूल्यों, सुशासन और संवेदनशील राष्ट्रवाद के प्रतीक रहे। इन तीनों की प्रतिमाएँ मिलकर एक ऐसी वैचारिक त्रिमूर्ति प्रस्तुत करती हैं, जो भारत की राजनीतिक और सामाजिक चेतना का मार्गदर्शन करती है।

कूड़े के ढेर से प्रेरणास्थल बनने की यात्रा

जिस भूमि पर आज राष्ट्र प्रेरणा स्थल खड़ा है, वह कभी शहर के लिये परेशानी का कारण थी। यहाँ वर्षों तक कूड़े का विशाल ढेर लगा रहता था और आसपास के इलाकों में गन्दगी व दुर्गंध फैली रहती थी। शहरी विकास प्राधिकरण और राज्य सरकार ने इस क्षेत्र को पुनर्विकसित करने का निर्णय लिया। आधुनिक तकनीक, सुनियोजित प्लानिंग और पर्यावरणीय दृष्टिकोण के साथ क्षेत्र को पूरी तरह बदल दिया। यह परिवर्तन न केवल भौतिक है, बल्कि यह सोच और संकल्प की शक्ति को भी दर्शाता है।

भव्य वास्तुकला और आधुनिक स्वरूप

राष्ट्र प्रेरणा स्थल की वास्तुकला आधुनिकता और भारतीय सांस्कृतिक प्रतीकों का सुन्दर संगम है। चौड़े मार्ग, खुला परिसर, आकर्षक लैण्डस्केप और सुसज्जित मंच इसे एक भव्य स्वरूप देते हैं। यहाँ बनाये गये पैदल पथ, बैठने की व्यवस्था और प्रकाश व्यवस्था इसे हर आयु वर्ग के लोगों के लिये सहज और आकर्षक बनाती है। रात के समय रोशनी से नहाया यह परिसर एक अलग ही भव्यता प्रस्तुत करता है।

संग्रहालय

परिसर में विकसित संग्रहालय राष्ट्र प्रेरणा स्थल का एक अहम हिस्सा है। यहाँ आधुनिक डिजिटल तकनीक के माध्यम से तीनों महापुरुषों के जीवन, संघर्ष, विचार और योगदान को दर्शाया गया है। ऑडियो–विजुअल माध्यम, इण्टरैक्टिव स्क्रीन और दुर्लभ चित्रों के जरिये आगंतुकों को इतिहास से सीधे जोड़ने का प्रयास किया गया है। विद्यार्थियों और युवाओं के लिये यह संग्रहालय प्रेरणा और अध्ययन का केन्द्र बन सकता है।

सांस्कृतिक और वैचारिक गतिविधियों का केन्द्र

राष्ट्र प्रेरणा स्थल को एक जीवन्त मंच के रूप में विकसित किया गया है। यहाँ सांस्कृतिक कार्यक्रम, राष्ट्रवादी विषयों पर संगोष्ठियाँ, कवि सम्मेलन, नाट्य मंचन और राष्ट्रीय पर्वों के आयोजन की व्यवस्था है। इससे यह स्थल केवल देखने की जगह नहीं, बल्कि विचारों के आदान–प्रदान और सांस्कृतिक जागरण का केन्द्र बनता है।

पर्यावरण संरक्षण पर विशेष ध्यान

इस परियोजना में पर्यावरणीय सन्तुलन को प्राथमिकता दी गयी है। बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण किया गया, हरित पट्टियाँ विकसित की गयी और वर्षा जल संचयन की व्यवस्था की गयी है। सौर ऊर्जा के उपयोग से परिसर को ऊर्जा दक्ष बनाने का प्रयास किया गया है। यह स्थल शहरी विकास के साथ पर्यावरण संरक्षण का भी उदाहरण प्रस्तुत करता है।

स्थल बनेगा आने वाली पीढ़ियों के लिये प्रेरणा

लोकार्पण के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि राष्ट्र प्रेरणा स्थल आने वाली पीढ़ियों के लिये प्रेरणा का स्रोत बनेगा। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे इन महापुरुषों के विचारों को आत्मसात कर राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाएँ। पीएम मोदी ने इसे 'विचार से विकास' की दिशा में एक मजबूत कदम बताया।

लखनऊ की पहचान में नया अध्याय

नवाबी तहजीब और ऐतिहासिक धरोहरों के लिए पहचाने जाने वाले लखनऊ को अब एक ऐसा स्थल मिला है, जो आधुनिक भारत की वैचारिक पहचान को दर्शाता है। यह शहर की शान बनकर उभरा है और यह बताता है कि सही संकल्प और दृष्टि से किसी भी उपेक्षित स्थान को प्रेरणा का केन्द्र बनाया जा सकता है।

RNI. No. UPHIN/2015/65982 डाक पंजी. क्र.- एस.एस.पी./ ल.डब्ल्यू./ अन.पी.-511/2025-27 प्रेषण तिथि: 05, 06 व 20, 21 (प्रत्येक माह)

श्रीराम प्राण-प्रतिष्ठा दिवस अयोध्या

31.12.2025